

# 1 सलातीन

## अदूनियाह की साजिश

1 दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे हमेशा सर्दी लगती थी, और उस पर मर्जीद बिस्तर डालने से कोई फायदा न होता था।

2 यह देखकर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, “अगर इजाज़त हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान कुँवारी ढूँड लें जो आपकी खिदमत में हाज़िर रहे और आपकी देख-भाल करे। लड़की आपके साथ लेटकर आपको गरम रखे।”

3 चुनौचे वह पूरे मुल्क में किसी खूबसूरत लड़की की तलाश करने लगे। ढूँडते ढूँडते अबीशाग शूनीमी को चुनकर बादशाह के पास लाया गया।

4 अब से वह उस की खिदमत में हाज़िर होती और उस की देख-भाल करती रही। लड़की निहायत खूबसूरत थी, लेकिन बादशाह ने कभी उससे सोहबत न की।

5-6 उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की साजिश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा था। यों वह अबीसलूम का सौतेला भाई और उसके मरने पर दाऊद का सबसे बड़ा बेटा था। शक्लो-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उसके बाप ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा है। अब अदूनियाह अपने आपको लोगों के सामने पेश करके एलान करने लगा, “मैं ही बादशाह बनूँगा।” इस मक़सद के तहत उसने अपने लिए रथ और घोड़े खरीदकर 50 आदमियों को रख लिया ताकि वह जहाँ भी जाए उसके आगे आगे चलते रहें।

7 उसने योआब बिन ज़रूयाह और अबियातर इमाम से बात की तो वह उसके साथी बनकर उस की हिमायत करने के लिए तैयार हुए।

8 लेकिन सदोक इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा और नातन नबी उसके साथ नहीं थे, न सिमई, रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

9 एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के करीब की चट्टान जुहलत के पास ज़ियाफ़त की। काफ़ी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े बछड़े ज़बह किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के तमाम बेटों और यहदाह के तमाम शाही अफ़सरों को दावत दी थी।

10 कुछ लोगों को जान-बूझकर इसमें शामिल नहीं किया गया था। उनमें उसका भाई सुलेमान, नातन नबी, बिनायाह और दाऊद के मुहाफिज़ शामिल थे।

दाऊद सुलेमान को बादशाह करार देता है

11 तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला और बोला, “क्या यह खबर आप तक नहीं पहुँची कि हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आपको बादशाह बना लिया है? और हमारे आका दाऊद को इसका इल्म तक नहीं!

12 आपकी और आपके बेटे सुलेमान की ज़िंदगी बड़े खतरे में है। इसलिए लाज़िम है कि आप मेरे मशवरे पर फ़ौरन अमल करें।

13 दाऊद बादशाह के पास जाकर उसे बता देना, ‘ऐ मेरे आका और बादशाह, क्या आपने क्रसम खाकर मुझसे वादा नहीं किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख्तनशीन होगा? तो फिर अदूनियाह क्यों बादशाह बन गया है?’

14 आपकी बादशाह से गुफ्तगू अभी खत्म नहीं होगी कि मैं दाखिल होकर आपकी बात की तसदीक करूँगा।”

15 बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो सोने के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह बहुत उग्ररसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस की देख-भाल कर रही थी।

16 बत-सबा कमरे में दाखिल होकर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गई। दाऊद ने पूछा, “क्या बात है?”

17 बत-सबा ने कहा, “मेरे आका, आपने तो रब अपने खुदा की क्रसम खाकर मुझसे वादा किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख्तनशीन होगा।

18 लेकिन अब अदूनियाह बादशाह बन बैठा है और मेरे आका और बादशाह को इसका इल्म तक नहीं।

19 उसने ज़ियाफ़त के लिए बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियाँ ज़बह करके तमाम शहज़ादों को दावत दी है। अबियातर इमाम और फ़ौज़ का कमाँडर योआब भी इनमें शामिल हैं, लेकिन आपके खादिम सुलेमान को दावत नहीं मिली।

20 ऐ बादशाह मेरे आका, इस वक़्त तमाम इसराईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब आपसे यह जानने के लिए तड़पते हैं कि आपके बाद कौन तख्तनशीन होगा।

21 अगर आपने जल्द ही कदम न उठाया तो आपके कूच कर जाने के फ़ौरन बाद मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना बनकर मुजरिम ठहरेंगे।”

22-23 बत-सबा अभी बादशाह से बात कर ही रही थी कि दाऊद को इतला दी गई कि नातन नबी आपसे मिलने आया है। नबी कमरे में दाखिल होकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया।

24 फिर उसने कहा, “मेरे आका, लगता है कि आप इस हक में हैं कि अदूनियाह आपके बाद तख्तनशीन हो।

25 क्योंकि आज उसने ऐन-राजिल जाकर बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियों को जबह किया है। ज़ियाफ़त के लिए उसने तमाम शहज़ादों, तमाम फ़ौजी अफ़सरों और अबियातर इमाम को दावत दी है। इस वक़्त वह उसके साथ खाना खा खाकर और मै पी पीकर नारा लगा रहे हैं, ‘अदूनियाह बादशाह ज़िंदाबाद!’

26 कुछ लोगों को जान-बूझकर दावत नहीं दी। उनमें मैं आपका खादिम, सदोक इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा और आपका खादिम सुलेमान भी शामिल हैं।

27 मेरे आका, क्या आपने वाकई इसका हुकम दिया है? क्या आपने अपने खादिमों को इतला दिए बग़ैर फ़ैसला किया है कि यह शख्स बादशाह बनेगा?”

28 जवाब में दाऊद ने कहा, “बत-सबा को बुलाएँ!” वह वापस आई और बादशाह के सामने खड़ी हो गई।

29 बादशाह बोला, “रब की हयात की कसम जिसने फ़िघा देकर मुझे हर मुसीबत से बचाया है,

30 आपका बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा बल्कि आज ही मेरे तख्त पर बैठ जाएगा। हाँ, आज ही मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने रब इसराईल के खुदा की कसम खाकर आपसे किया था।”

31 यह सुनकर बत-सबा औंधे मुँह झुक गई और कहा, “मेरा मालिक दाऊद बादशाह ज़िंदाबाद!”

32 फिर दाऊद ने हुकम दिया, “सदोक इमाम, नातन नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला लाएँ।” तीनों आए

33 तो बादशाह उनसे मुखातिब हुआ, “मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ख़च्चर पर बिठाएँ। फिर मेरे अफ़सरों को साथ लेकर उसे जैह्न चश्मे तक पहुँचा दें।

34 वहाँ सदोक और नातन उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दें। नरसिगे को बजा बजाकर नारा लगाना, ‘सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!’

35 इसके बाद मेरे बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना। वह महल में दाखिल होकर मेरे तख्त पर बैठ जाए और मेरी जगह हुकूमत करे, क्योंकि मैंने उसे इसराईल और

यहूदाह का हुक्मरान मुकर्रर किया है।”

36 बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया, “आमीन, ऐसा ही हो! रब मेरे आक्रा का खुदा इस फैसले पर अपनी बरकत दे।

37 और जिस तरह रब आपके साथ रहा उसी तरह वह सुलेमान के साथ भी हो, बल्कि वह उसके तख्त को आपके तख्त से कहीं ज़्यादा सरबुलंद करे!”

38 फिर सदोक इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफिज़ करेतियों और फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के ख़चचर पर बिठाकर उसे जैहन चश्मे तक पहुँचा दिया।

39 सदोक के पास तेल से भरा मेंढे का वह सींग था जो मुक़द्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब उसने यह तेल लेकर सुलेमान को मसह किया। फिर नरसिंगा बजाया गया और लोग मिलकर नारा लगाने लगे, “सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद! सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!”

40 तमाम लोग बाँसरी बजाते और खुशी मनाते हुए सुलेमान के पीछे चलने लगे। जब वह दुबारा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो इतना शोर था कि ज़मीन लरज़ उठी।

### अदूनियाह की शिकस्त

41 लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उसके मेहमानों तक भी पहुँच गईं। थोड़ी देर पहले वह खाने से फ़ारिग हुए थे। नरसिंगे की आवाज़ सुनकर योआब चौक उठा और पूछा, “यह क्या है? शहर से इतना शोर क्यों सुनाई दे रहा है?”

42 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि अबियातर का बेटा यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, “हमारे पास आँ। आप जैसे लायक आदमी अच्छी ख़बर लेकर आ रहे होंगे।”

43 यूनतन ने जवाब दिया, “अफ़सोस, ऐसा नहीं है। हमारे आक्रा दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है।

44 उसने उसे सदोक इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफिज़ करेतियों और फ़लेतियों के साथ जैहन चश्मे के पास भेज दिया है। सुलेमान बादशाह के ख़चचर पर सवार था।

45 जैहन चश्मे के पास सदोक इमाम और नातन नबी ने उसे मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह खुशी मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर में हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आपको सुनाई दे रहा है।

46 अब सुलेमान तख्त पर बैठ चुका है,

47 और दरबारी हमारे आका दाऊद बादशाह को मुबारकबाद देने के लिए उसके पास पहुँच गए हैं। वह कह रहे हैं, 'आपका खुदा करे कि सुलेमान का नाम आपके नाम से भी ज्यादा मशहूर हो जाए। उसका तख्त आपके तख्त से कहीं ज्यादा सरबुलंद हो।' बादशाह ने अपने बिस्तर पर झुककर अल्लाह की परस्तिश की

48 और कहा, 'रब इसराईल के खुदा की तमजीद हो जिसने मेरे बेटों में से एक को मेरी जगह तख्त पर बिठा दिया है। उसका शुक है कि मैं अपनी आँखों से यह देख सका।'

49 यूनतन के मुँह से यह खबर सुनकर अदूनियाह के तमाम मेहमान घबरा गए। सब उठकर चारों तरफ मुंतशिर हो गए।

50 अदूनियाह सुलेमान से खौफ खाकर मुकद्दस खैमे के पास गया और कुरबानगाह के सींगों से लिपट गया।

51 किसी ने सुलेमान के पास जाकर उसे इतला दी, "अदूनियाह को सुलेमान बादशाह से खौफ है, इसलिए वह कुरबानगाह के सींगों से लिपटे हुए कह रहा है, 'सुलेमान बादशाह पहले कसम खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं उतारेगा।'"

52 सुलेमान ने वादा किया, "अगर वह लायक साबित हो तो उसका एक बाल भी बीका नहीं होगा। लेकिन जब भी उसमें बदी पाई जाए वह जरूर मरेगा।"

53 सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के पास भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के पास पहुँचाएँ। अदूनियाह आया और सुलेमान के सामने औंधे मुँह झुक गया। सुलेमान बोला, "अपने घर चले जाओ!"

## 2

### दाऊद की आखिरी हिदायात

1 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर जाने का वक़्त करीब है तो उसने अपने बेटे सुलेमान को हिदायत की,

2 "अब मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ दुनिया के हर शख्स को जाना होता है। चुनाँचे मज़बूत हों और मरदानगी दिखाएँ।

3 जो कुछ रब आपका खुदा आपसे चाहता है वह करें और उस की राहों पर चलते रहें। अल्लाह की शरीअत में दर्ज हर हुक्म और हिदायत पर पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी करेंगे और जहाँ भी जाएंगे आपको कामयाबी नसीब होगी।

4 फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा। क्योंकि उसने फ़रमाया है, 'अगर तेरी औलाद अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर पूरे दिलो-जान से मेरी वफ़ादार रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।'

5 दो एक और बातें भी हैं। आपको ख़ूब मालूम है कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा सुलूक किया है। इसराईल के दो कमांडरों अबिनैर बिन नैर और अमासा बिन यतर को उसने क़त्ल किया। जब जंग नहीं थी उसने जंग का खून बहाकर अपनी पेट्टी और जूतों को बेक़ुसूर खून से आलूदा कर लिया है।

6 उसके साथ वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। योआब बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।

7 ताहम बरज़िल्ली जिलियादी के बेटों पर मेहरबानी करें। वह आपकी मेज़ के मुस्तक़िल मेहमान रहें, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ भी ऐसा ही सुलूक किया जब मैंने आपके भाई अबीसलूम की वजह से यरूशलम से हिजरत की।

8 बहरीम के बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें। जिस दिन मैं हिजरत करते हुए महनायम से गुज़र रहा था तो उसने मुझ पर लानतें भेजीं। लेकिन मेरी वापसी पर वह दरियाए-यरदन पर मुझसे मिलने आया और मैंने रब की कसम खाकर उससे वादा किया कि उसे मौत के घाट नहीं उतारूंगा।

9 लेकिन आप उसका जुर्म नज़रंदाज़ न करें बल्कि उस की मुनासिब सज़ा दें। आप दानिशमंद हैं, इसलिए आप ज़रूर सज़ा देने का कोई न कोई तरीका ढूँड निकालेंगे। वह बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।”

10 फिर दाऊद मरकर अपने बापदादा से जा मिला। उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है।

11 वह कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा, सात साल हबस्न में और 33 साल यरूशलम में।

12 सुलेमान अपने बाप दाऊद के बाद तख़्तनशीन हुआ। उस की हुकूमत मज़बूती से कायम हुई।

### अदूनियाह की मौत

13 एक दिन दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास आया। बत-सबा ने पूछा, “क्या आप अमनपसंद इरादा रखकर आए हैं?” अदूनियाह बोला, “जी,

14 बल्कि मेरी आपसे गुज़ारिश है।”

बत-सबा ने जवाब दिया, “तो फिर बताएँ!”

15 अदूनियाह ने कहा, “आप तो जानती हैं कि असल में बादशाह बनने का हक मेरा था। और यह तमाम इसराईल की तवक्को भी थी। लेकिन अब तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह बन गया है, क्योंकि यही रब की मरज़ी थी।

16 अब मेरी आपसे दरखास्त है। इससे इनकार न करें।” बत-सबा बोली, “बताएँ।”

17 अदूनियाह ने कहा, “मैं अबीशाग शूनीमी से शादी करना चाहता हूँ। बराहे-करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी सिफारिश करें ताकि बात बन जाए। अगर आप बात करें तो वह इनकार नहीं करेगा।”

18 बत-सबा राजी हुई, “चलें, ठीक है। मैं आपका यह मामला बादशाह को पेश करूँगी।”

19 चुनौचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास गई ताकि उसे अदूनियाह का मामला पेश करे। जब दरबार में पहुँची तो बादशाह उठकर उससे मिलने आया और उसके सामने झुक गया। फिर वह दुबारा तख्त पर बैठ गया और हुक्म दिया कि माँ के लिए भी तख्त रखा जाए। बादशाह के दहने हाथ बैठकर

20 उसने अपना मामला पेश किया, “मेरी आपसे एक छोटी-सी गुज़ारिश है। इससे इनकार न करें।” बादशाह ने जवाब दिया, “अम्मी, बताएँ अपनी बात, मैं इनकार नहीं करूँगा।”

21 बत-सबा बोली, “अपने भाई अदूनियाह को अबीशाग शूनीमी से शादी करने दें।”

22 यह सुनकर सुलेमान भड़क उठा, “अदूनियाह की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है जो आप पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं तो क्यों न बराहे-रास्त तकाज़ा करें कि अदूनियाह मेरी जगह तख्त पर बैठ जाए। आखिर वह मेरा बड़ा भाई है, और अबियातर इमाम और योआब बिन ज़रूयाह भी उसका साथ दे रहे हैं।”

23 फिर सुलेमान बादशाह ने रब की कसम खाकर कहा, “इस दरखास्त से अदूनियाह ने अपनी मौत पर मुहर लगाई है। अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं उसे मौत के घाट न उतारूँ।

24 रब की कसम जिसने मेरी तसदीक करके मुझे मेरे बाप दाऊद के तख्त पर बिठा दिया और अपने वादे के मुताबिक मेरे लिए घर तामीर किया है, अदूनियाह

को आज ही मरना है!”

25 फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को मौत के घाट उतार दे। चुनौचे वह निकला और उसे मार डाला।

**योआब और अबियातर की सज़ा**

26 अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब यहाँ से चले जाएँ। अनतोत में अपने घर में रहें और वहाँ अपनी ज़मीनें सँभालें। गो आप सज़ाए-मौत के लायक हैं तो भी मैं इस वक़्त आपको नहीं मार दूँगा, क्योंकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने रब कादिरे-मुतलक के अहद का संदूक उठाए हर जगह उनके साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम तकलीफ़देह और मुश्किलतरीन लमहात में शरीक रहे हैं।”

27 यह कहकर सुलेमान ने अबियातर का रब के हुज़ूर इमाम की खिदमत संरंजाम देने का हक़ मनसूख़ कर दिया। यों रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो उसने सैला में एली के घराने के बारे में की थी।

28 योआब को जल्द ही पता चला कि अदूनियाह और अबियातर से क्या कुछ हुआ है। वह अबीसलूम की साज़िशों में तो शरीक नहीं हुआ था लेकिन बाद में अदूनियाह का साथी बन गया था। इसलिए अब वह भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में दाखिल हुआ और कुरबानगाह के सीगों को पकड़ लिया।

29 सुलेमान बादशाह को इतला दी गई, “योआब भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में गया है। अब वह वहाँ कुरबानगाह के पास खड़ा है।” यह सुनकर सुलेमान ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को मार दो!”

30 बिनायाह रब के ख़ैमे में जाकर योआब से मुख़ातिब हुआ, “बादशाह फ़रमाता है कि ख़ैमे से निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया, “नहीं, अगर मरना है तो यहीं मरूँगा।” बिनायाह बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब का जवाब सुनाया।

31 तब बादशाह ने हुक्म दिया, “चलो, उस की मरज़ी! उसे वहीं मारकर दफ़न कर दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन कत्लों के जवाबदेह न ठहरे जो उसने बिलावजह किए हैं।

32 रब उसे उन दो आदमियों के कत्ल की सज़ा दे जो उससे कहीं ज्यादा शरीफ़ और अच्छे थे यानी इसराईली फ़ौज का कमाँडर अबिनैर बिन नैर और यहदाह की फ़ौज का कमाँडर अमासा बिन यतर। योआब ने दोनों को तलवार से मार डाला, हालाँकि मेरे बाप को इसका इल्म नहीं था।

33 योआब और उस की औलाद हमेशा तक इन कत्लों के कुसूरवार ठहरें। लेकिन रब दाऊद, उस की औलाद, घराने और तख्त को हमेशा तक सलामती अता करे।”

34 तब बिनायाह ने मुकद्दस खैमे में जाकर योआब को मार दिया। उसे यहूदाह के बयाबान में उस की अपनी ज़मीन में दफना दिया गया।

35 योआब की जगह बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को फौज का कमाँडर बना दिया। अबियातर का ओहदा उसने सदोक़ इमाम को दे दिया।

### सिमई की मौत

36 इसके बाद बादशाह ने सिमई को बुलाकर उसे हुक्म दिया, “यहाँ यरूशलम में अपना घर बनाकर रहना। आइंदा आपको शहर से निकलने की इजाज़त नहीं है, खाह आप कहीं भी जाना चाहें।

37 यक्रीन जानें कि ज्योंही आप शहर के दरवाज़े से निकलकर वादीए-किदरोन को पार करेंगे तो आपको मार दिया जाएगा। तब आप खुद अपनी मौत के ज़िम्मादार ठहरेंगे।”

38 सिमई ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ मेरे आका ने फरमाया है मैं करूँगा।”

सिमई ढेर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ यरूशलम में रहा।

39 तीन साल यों ही गुज़र गए। लेकिन एक दिन उसके दो गुलाम भाग गए। चलते चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका के पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इतला दी, “आपके गुलाम जात में ठहरे हुए हैं।”

40 वह फ़ौरन अपने गधे पर जीन कसकर गुलामों को ढूँढ़ने के लिए जात में अकीस के पास चला गया। दोनों गुलाम अब तक वही थे तो सिमई उन्हें पकड़कर यरूशलम वापस ले आया।

41 सुलेमान को ख़बर मिली कि सिमई जात जाकर लौट आया है।

42 तब उसने उसे बुलाकर पूछा, “क्या मैंने आपको आगाह करके नहीं कहा था कि यक्रीन जानें कि ज्योंही आप यरूशलम से निकलेंगे आपको मार दिया जाएगा, खाह आप कहीं भी जाना चाहें। और क्या आपने जवाब में रब की कसम खाकर नहीं कहा था, ‘ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा?’”

43 लेकिन अब आपने अपनी कसम तोड़कर मेरे हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की है। यह आपने क्यों किया है?”

44 फिर बादशाह ने कहा, “आप खूब जानते हैं कि आपने मेरे बाप दाऊद के साथ कितना बुरा सुलूक किया। अब रब आपको इसकी सज़ा देगा।

45 लेकिन सुलेमान बादशाह को वह बरकत देता रहेगा, और दाऊद का तख्त रब के हुज़ूर अबद तक कायम रहेगा।”

46 फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह ने उसे बाहर ले जाकर तलवार से मार दिया। यों सुलेमान की इसराईल पर हुक्मत मज़बूत हो गई।

### 3

#### सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

1 सुलेमान फिरौन की बेटी से शादी करके मिसरी बादशाह का दामाद बन गया। शुरू में उस की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता था। क्योंकि उस वक़्त नया महल, रब का घर और शहर की फ़सील ज़ेरे-तामीर थे।

2 उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं हुआ था, इसलिए इसराईली अपनी कुरबानियाँ मुख्तलिफ़ ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे।

3 सुलेमान रब से प्यार करता था और इसलिए अपने बाप दाऊद की तमाम हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन वह भी जानवरों की अपनी कुरबानियाँ और बख़ूर ऐसे ही मक़ामों पर रब को पेश करता था।

4 एक दिन बादशाह ज़िबऊन गया और वहाँ भस्म होनेवाली 1,000 कुरबानियाँ चढाई, क्योंकि उस शहर की ऊँची जगह कुरबानियाँ चढ़ाने का सबसे अहम मरकज़ थी।

5 जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो रब ख़ाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी ख़ाहिश पूरी करूँगा।”

6 सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि तेरा ख़ादिम वफ़ादारी, इनसाफ़ और खुलूसदिली से तेरे हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी आज तक जारी रही है, क्योंकि तूने उसका बेटा उस की जगह तख्तनशीन कर दिया है।

7 ऐ रब मेरे खुदा, तूने अपने खादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह तख्त पर बिठा दिया है। लेकिन मैं अभी छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी ज़िम्मादारियाँ सहीह तौर पर सँभालने का तजरबा नहीं हुआ।

8 तो भी तेरे खादिम को तेरी चुनी हुई क्रौम के बीच में खड़ा किया गया है, इतनी अज़ीम क्रौम के दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता।

9 चुनाँचे मुझे सुननेवाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी क्रौम का इनसाफ़ करूँ और सहीह और ग़लत बातों में इम्तियाज़ कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी इस अज़ीम क्रौम का इनसाफ़ कर सकता है?”

10 सुलेमान की यह दरखास्त रब को पसंद आई,

11 इसलिए उसने जवाब दिया, “मैं खुश हूँ कि तूने न उम्र की दराज़ी, न दौलत और न अपने दुश्मनों की हलाकत बल्कि इम्तियाज़ करने की सलाहियत माँगी है ताकि सुनकर इनसाफ़ कर सके।

12 इसलिए मैं तेरी दरखास्त पूरी करके तुझे इतना दानिशामंद और समझदार बना दूँगा कि उतना न माज़ी में कोई था, न मुस्तक़बिल में कभी कोई होगा।

13 बल्कि तुझे वह कुछ भी दे दूँगा जो तूने नहीं माँगा, यानी दौलत और इज़्जत। तेरे जीते-जी कोई और बादशाह तेरे बराबर नहीं पाया जाएगा।

14 अगर तू मेरी राहों पर चलता रहे और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे तो फिर मैं तेरी उम्र दराज़ करूँगा।”

15 सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने खाब देखा है। वह यरूशलम को वापस चला गया और रब के अहद के संदूक के सामने खड़ा हुआ। वहाँ उसने भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश कीं, फिर बड़ी ज़ियाफ़त की जिसमें तमाम दरबारी शरीक हुए।

दो कसबियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फैसला

16 एक दिन दो कसबियाँ बादशाह के पास आईं।

17 एक बात करने लगी, “मेरे आका, हम दोनों एक ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले इसकी मौजूदगी में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ।

18 दो दिन के बाद इसके भी बचा हुआ। हम अकेली ही थी, हमारे सिवा घर में कोई और नहीं था।

19 एक रात को मेरी साथी का बच्चा मर गया। माँ ने सोते में करवटें बदलते बदलते अपने बच्चे को दबा दिया था।

20 रातों रात इसे मालूम हुआ कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही थी। यह देखकर इसने मेरे बच्चे को उठाया और अपने मुरदे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर वह मेरे बेटे के साथ सो गई।

21 सुबह के वक़्त जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो देखा कि उससे जान निकल गई है। लेकिन जब दिन मज़ीद चढ़ा और मैं गौर से उसे देख सकी तो क्या देखती हूँ कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैंने जन्म दिया है!”

22 दूसरी औरत ने उस की बात काटकर कहा, “हरगिज़ नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा ज़िंदा है और तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख उठी, “कभी भी नहीं! ज़िंदा बच्चा मेरा और मुरदा बच्चा तेरा है।” ऐसी बातें करते करते दोनों बादशाह के सामने झगड़ती रहीं।

23 फिर बादशाह बोला, “सीधी-सी बात यह है कि दोनों ही दावा करती हैं कि ज़िंदा बच्चा मेरा है और मुरदा बच्चा दूसरी का है।

24 ठीक है, फिर मेरे पास तलवार ले आएँ!” उसके पास तलवार लाई गई।

25 तब उसने हुक्म दिया, “ज़िंदा बच्चे को बराबर के दो हिस्सों में काटकर हर औरत को एक एक हिस्सा दे दें।”

26 यह सुनकर बच्चे की हकीकती माँ ने जिसका दिल अपने बेटे के लिए तडपता था बादशाह से इलतमास की, “नहीं मेरे आका, उसे मत मारें! बराहे-करम उसे इसी को दे दीजिए।”

लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट दें। अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज़ कम तेरा भी नहीं होगा।”

27 यह देखकर बादशाह ने हुक्म दिया, “स्कें! बच्चे पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली औरत को दे दें जो चाहती है कि ज़िंदा रहे। वही उस की माँ है।”

28 जल्द ही सुलेमान के इस फैसले की खबर पूरे मुल्क में फैल गई, और लोगों पर बादशाह का ख़ौफ़ छा गया, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने उसे इनसाफ़ करने की ख़ास हिकमत अता की है।

## 4

सुलेमान के सरकारी अफसरों की फहरिस्त

- 1 अब सुलेमान पूरे इसराईल पर हुकूमत करता था।
- 2 यह उसके आला अफसर थे :  
इमामे-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक,
- 3 मीरमुंशी : सीसा के बेटे इलीह्रिफ और अखियाह,  
बादशाह का मुशीर-खास : यहसफत बिन अखीलूद,
- 4 फ़ौज का कमांडर : बिनायाह बिन यहोयदा,  
इमाम : सदोक और अबियातर,
- 5 ज़िलों पर मुकर्रर अफसरों का सरदार : अज़रियाह बिन नातन,  
बादशाह का करीबी मुशीर : इमाम ज़बूद बिन नातन,
- 6 महल का इंचारज : अखीसर,  
बेगारियों का इंचारज : अदनीराम बिन अबदा
- 7 सुलेमान ने मुल्के-इसराईल को बारह ज़िलों में तकसीम करके हर ज़िले पर एक अफसर मुकर्रर किया था। इन अफसरों की एक ज़िम्मादारी यह थी कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफसर को साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थी।
- 8 दर्जे-ज़ैल इन अफसरों और उनके इलाकों की फ़हरिस्त है। बिन-ह्र :  
इफराईम का पहाड़ी इलाका,
- 9 बिन-दिकर : मकस, सालबीम, बैत-शम्स और ऐलोन-बैत-हनान,
- 10 बिन-हसद : अरूबोत, सोका और हिफर का इलाका,
- 11 सुलेमान की बेटी ताफत का शौहर बिन-अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाका,
- 12 बाना बिन अखीलूद : तानक, मजिदो और उस बैत-शान का पूरा इलाका जो ज़रतान के पडोस में यज़्ज़एल के नीचे वाके है, नीज़ बैत-शान से लेकर अबील-महला तक का पूरा इलाका बशमूल युक्रमियाम,
- 13 बिन-जबर : जिलियाद में रामात का इलाका बशमूल यार्ईर बिन मनस्सी की बस्तियाँ, फिर बसन में अरजूब का इलाका। इसमें 60 ऐसे फ़सीलदार शहर शामिल थे जिनके दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे थे,
- 14 अखी-नदाब बिन इदू : महनायम,
- 15 सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अखीमाज़ : नफताली का कबायली इलाका,
- 16 बाना बिन हसी : आशर का कबायली इलाका और बालोत,

17 यह्सफत बिन फरूह : इशकार का कबायली इलाका,

18 सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का कबायली इलाका,

19 जबर बिन ऊरी जिलियाद का वह इलाका जिस पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज की हुकूमत थी। इस पूरे इलाके पर सिर्फ यही एक अफसर मुकर्रर था।

### सुलेमान की हुकूमत की अज़मत

20 उस ज़माने में इसराईल और यहदाह के लोग साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। लोगों को खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह खुश थे।

21 सुलेमान दरियाए-फुरात से लेकर फिलिस्तियों के इलाके और मिसरी सरहद तक तमाम ममालिक पर हुकूमत करता था। उसके जीते-जी यह ममालिक उसके ताबे रहे और उसे खराज देते थे।

22 सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह थीं : तकरीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा, तकरीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा,

23 10 मोटे-ताज़े बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100 भेड़-बकरियाँ, और इसके अलावा हिरन, गज़ाल, मृग और मुख्तलिफ़ किस्म के मोटे-ताज़े मुरग।

24 जितने ममालिक दरियाए-फुरात के मग़रिब में थे उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी तिफ़सह से लेकर गज़ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी मुल्क से उसका झगडा नहीं था, बल्कि सबके साथ सुलह थी।

25 उसके जीते-जी पूरे यहदाह और इसराईल में सुलह-सलामती रही। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक हर एक सलामती से अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख्त के साये में बैठ सकता था।

26 अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने 4,000 थान बनवाए। उसके 12,000 घोड़े थे।

27 बारह ज़िलों पर मुकर्रर अफ़सर बाकायदगी से सुलेमान बादशाह और उसके दरबार की ज़रूरियात पूरी करते रहे। हर एक को साल में एक माह के लिए सब कुछ मुहैया करना था। उनकी मेहनत की वजह से दरबार में कोई कमी न हुई।

28 बादशाह की हिदायत के मुताबिक़ वह रथों के घोड़ों और दूसरे घोड़ों के लिए दरकार जौ और भूसा बराहे-रास्त उनके थानों तक पहुँचाते थे।

29 अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज्यादा हिकमत और समझ अता की। उसे साहिल की रेत जैसा वसी इल्म हासिल हुआ।

30 उस की हिकमत इसराईल के मशरिक में रहनेवाले और मिसर के आलिमों से कहीं ज्यादा थी।

31 इस लिहाज से कोई भी उसके बराबर नहीं था। वह ऐतान इजराही और महोल के बेटों हैमान, कलकूल और दरदा पर भी सबकत ले गया था। उस की शोहरत इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई।

32 उसने 3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख दिए।

33 वह तफसील से मुख्तलिफ़ किस्म के पौदों के बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के बड़े दरख्त से लेकर छोटे पौदे जूफ़ा तक जो दीवार की दराइडों में उगता है। वह महारत से चौपाइयों, परिदों, रेंगनेवाले जानवरों और मछलियों की तफसीलात भी बयान कर सकता था।

34 चुनाँचे तमाम ममालिक के बादशाहों ने अपने सफ़ीरों को सुलेमान के पास भेज दिया ताकि उस की हिकमत सुनें।

## 5

### हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

1 सूर का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे खबर मिली कि दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके बादशाह बनाया गया है तो उसने अपने सफ़ीरों को उसे मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया।

2 तब सुलेमान ने हीराम को पैगाम भेजा,

3 “आप जानते हैं कि मेरे बाप दाऊद रब अपने खुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहते थे। लेकिन यह उनके बस की बात नहीं थी, क्योंकि उनके जीते-जी इर्दगिर्द के ममालिक उनसे जंग करते रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का घर न बना सके।

4 अब हालात फ़रक़ हैं : रब मेरे खुदा ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न कोई मुख्तलिफ़ नज़र आता है, न कोई खतरा।

5 इसलिए मैं रब अपने खुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहता हूँ। क्योंकि मेरे बाप दाऊद के जीते-जी रब ने उनसे वादा किया था, ‘तेरे जिस बेटे को मैं तेरे बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।’

6 अब गुज़ारिश है कि आपके लकड़हारे लुबनान में मेरे लिए देवदार के दरख्त काट दें। मेरे लोग उनके साथ मिलकर काम करेंगे। आपके लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा करूँगा। जो कुछ भी आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप तो ख़ूब जानते हैं कि हमारे हाँ सैदा के लकड़हारों जैसे माहिर नहीं हैं।”

7 जब हीराम को सुलेमान का पैगाम मिला तो वह बहुत खुश होकर बोल उठा, “आज रब की हम्द हो जिसने दाऊद को इस बड़ी क़ौम पर हुकूमत करने के लिए इतना दानिशमंद बेटा अता किया है!”

8 सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा, “मुझे आपका पैगाम मिल गया है, और मैं आपकी ज़रूर मदद करूँगा। देवदार और जूनीपर की जितनी लकड़ी आपको चाहिए वह मैं आपके पास पहुँचा दूँगा।

9 मेरे लोग दरख्तों के तने लुबनान के पहाड़ी इलाके से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ हम उनके बेड़े बाँधकर समुंदर पर उस जगह पहुँचा देंगे जो आप मुक़र्रर करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से खोल देंगे, और आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े में आप मुझे इतनी खुगाक मुहैया करें कि मेरे दरबार की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ।”

10 चुनौचे हीराम ने सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहैया की जितनी उसे ज़रूरत थी।

11 मुआवज़े में सुलेमान उसे सालाना तकरीबन 32,50,000 किलोग्राम गंदुम और तकरीबन 4,40,000 लिटर जैतून का तेल भेजता रहा।

12 इसके अलावा सुलेमान और हीराम ने आपस में सुलह का मुआहदा किया। यों रब ने सुलेमान को हिकमत अता की जिस तरह उसने उससे वादा किया था।

रब का घर बनाने की पहली तैयारियाँ

13-14 सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम करने के लिए इसराईल में से 30,000 आदमियों की बेगार पर भरती की। उसने अदनीराम को उन पर मुक़र्रर किया। हर माह वह बारी बारी 10,000 अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यों हर मज़दूर एक माह लुबनान में और दो माह घर में रहता।

15 सुलेमान ने 80,000 आदमियों को कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें। 70,000 अफ़राद यह पत्थर यरूशलम लाते थे।

16 उन लोगों पर 3,300 निगरान मुक़र्रर थे।

17 बादशाह के हुकम पर वह कानों से बेहतरीन पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और उन्हें तराशकर रब के घर की बुनियाद के लिए तैयार किया।

18 जबल के कारीगरों ने सुलेमान और हीराम के कारीगरों की मदद की। उन्होंने मिलकर पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराशकर रब के घर की तामीर के लिए तैयार किया।

## 6

### रब के घर की तामीर

1 सुलेमान ने अपनी हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने जीब में रब के घर की तामीर शुरू की। इसराईल को मिसर से निकले 480 साल गुजर चुके थे।

2 इमारत की लंबाई 90 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 45 फुट थी।

3 सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फुट और आगे की तरफ 15 फुट लंबा था।

4 इमारत की दीवारों में खिड़कियाँ थीं जिन पर जंगले लगे थे।

5 इमारत से बाहर आकर सुलेमान ने दाएँ बाएँ की दीवारों और पिछली दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया जिसकी तीन मनज़िलें थीं और जिसमें मुख्तलिफ़ कमरे थे।

6 निचली मनज़िल की अंदर की चौड़ाई साढ़े 7 फुट, दरमियानी मनज़िल की 9 फुट और ऊपर की मनज़िल की साढ़े 10 फुट थी। वजह यह थी कि रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मनज़िल बमनज़िल कम होती गई। इस तरीके से बैरूनी ढाँचे की दूसरी और तीसरी मनज़िल के शहतीरों के लिए रब के घर की दीवार में स्राख बनाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा गया। यानी दरमियानी मनज़िल की इमारतवाली दीवार निचली की दीवार की निसबत कम मोटी और ऊपरवाली मनज़िल की इमारतवाली दीवार दरमियानी मनज़िल की दीवार की निसबत कम मोटी थी। यों इस ढाँचे की छतों के शहतीरों को इमारत की दीवार तोड़कर उसमें लगाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की दीवार पर ही रखा गया।

7 जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए इस्तेमाल हुए उन्हें पत्थर की कान के अंदर ही तराशकर तैयार किया गया। इसलिए जब उन्हें ज़ेरे-तामीर इमारत के पास लाकर जोड़ा गया तो न हथौड़ों, न छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई दी।

8 इस ढाँचे में दाखिल होने के लिए इमारत की दहनी दीवार में दरवाजा बनाया गया। वहाँ से एक सीढ़ी परस्तार को दरमियानी और ऊपर की मनज़िल तक पहुँचाती थी।

9 यों सुलेमान ने इमारत को तकमील तक पहुँचाया। छत को देवदार के शहतीरों और तख्तों से बनाया गया।

10 जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़ खड़ा किया गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत की बाहरवाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की तीनों मनज़िलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फुट थी।

11 एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ,

12 “जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक है जो तू मेरे लिए बना रहा है, अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारे तो मैं तेरे लिए वह कुछ करूँगा जिसका वादा मैंने तेरे बाप दाऊद से किया है।

13 तब मैं इसराईल के दरमियान रहूँगा और अपनी कौम को कभी तर्क नहीं करूँगा।”

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

14 जब इमारत की दीवारों और छत मुकम्मल हुई

15 तो अंदरूनी दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख्ते लगाए गए। फ़र्श पर जूनीपर के तख्ते लगाए गए।

16 अब तक इमारत का एक ही कमरा था, लेकिन अब उसने देवदार के तख्तों से फ़र्श से लेकर छत तक दीवार खड़ी करके पिछले हिस्से में अलग कमरा बना दिया जिसकी लंबाई 30 फुट थी। यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया।

17 जो हिस्सा सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुकर्रर किया गया। उस की लंबाई 60 फुट थी।

18 इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों पर देवदार के तख्ते यों लगे थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख्तों पर तूँबे और फूल कंदा किए गए थे।

19 पिछले कमरे में रब के अहद का संदूक रखना था।

20 इस कमरे की लंबाई 30 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 30 फुट थी। सुलेमान ने इसकी तमाम दीवारों और फ़र्श पर ख़ालिस सोना चढ़ाया। मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार की कुरबानगाह थी। उस पर भी सोना मँढा गया

21 बल्कि इमारत के सामनेवाले कमरे की दीवारों, छत और फ़र्श पर भी सोना मँढा गया। मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाजे पर सोने की जंजीरें लगाई गईं।

22 चुनौचे इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों, छत और फर्श पर सोना मँढा गया, और इसी तरह मुकद्दसतरीन कमरे के सामने की कुरबानगाह पर भी।

23 फिर सुलेमान ने जैतून की लकड़ी से दो कस्बी फरिश्ते बनवाए जिन्हें मुकद्दसतरीन कमरे में रखा गया। इन मुजस्समों का कद 15 फुट था।

24-25 दोनों शक्लो-सूरत में एक जैसे थे। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात सात फुट थी। चुनौचे एक पर के सिरे से दूसरे पर के सिरे तक का फासला 15 फुट था।

26 हर एक का कद 15 फुट था।

27 उन्हें मुकद्दसतरीन कमरे में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फरिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था।

28 इन फरिश्तों पर भी सोना मँढा गया।

29 मुकद्दस और मुकद्दसतरीन कमरों की दीवारों पर कस्बी फरिश्ते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए।

30 दोनों कमरों के फर्श पर भी सोना मँढा गया।

31 सुलेमान ने मुकद्दसतरीन कमरे का दरवाजा जैतून की लकड़ी से बनवाया। उसके दो किवाड़ थे, और चौखट की लकड़ी के पाँच कोने थे।

32 दरवाजे के किवाड़ों पर कस्बी फरिश्ते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए। इन किवाड़ों पर भी फरिश्तों और खजूर के दरख्तों समेत सोना मँढा गया।

33 सुलेमान ने इमारत में दाखिल होनेवाले दरवाजे के लिए भी जैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन उस की लकड़ी के चार कोने थे।

34 इस दरवाजे के दो किवाड़ जूनीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे।

35 इन किवाड़ों पर भी कस्बी फरिश्ते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए थे। फिर उन पर सोना यों मँढा गया कि वह अच्छी तरह इन बेल-बूटों के साथ लग गया।

36 इमारत के सामने एक अंदरूनी सहन बनाया गया जिसकी चारदीवारी यों तामीर हुई कि पत्थर के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया।

37 रब के घर की बुनियाद सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने जीब \* में डाली गई,

38 और उस की हुकूमत के ग्यारहवें साल के आठवें महीने बूल † में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक्शे के ऐन मुताबिक बना। इस काम पर कुल सात साल लग गए।

## 7

### सुलेमान का महल

1 जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के बाद मुकम्मल हुआ।

2-3 उस की एक इमारत का नाम 'लुबनान का जंगल' था। इमारत की लंबाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट थी। निचली मनज़िल एक बड़ा हाल था जिसके देवदार की लकड़ी के 45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन कतारों में खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर दूसरी मनज़िल के फर्श के लिए देवदार के तख्ते लगाए गए थे। दूसरी मनज़िल के मुख्तलिफ कमरे थे, और छत भी देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी।

4 हाल की दोनों लंबी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थीं, और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार की खिड़कियों के बिलकुल मुकाबिल थीं।

5 इन दीवारों के तीन तीन दरवाज़े भी एक दूसरे के मुकाबिल थे। उनकी चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।

6 इसके अलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल बनवाया जिसकी लंबाई 75 फुट और चौड़ाई 45 फुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था।

7 उसने दीवान भी तामीर किया जो दीवाने-अदल कहलाता था। उसमें उसका तख्त था, और वहाँ वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों दीवारों पर फर्श से लेकर छत तक देवदार के तख्ते लगे हुए थे।

8 दीवान के पीछे सहन था जिसमें बादशाह का रिहाइशी महल था। महल का डिज़ायन दीवान जैसा था। उस की मिसरी बीवी फिरौन की बेटी का महल भी डिज़ायन में दीवान से मुताबिकत रखता था।

\* 6:37 अप्रैल ता मई। † 6:38 अक्तूबर ता नवंबर।

9 यह तमाम इमारतें बुनियादों से लेकर छत तक और बाहर से लेकर बड़े सहन तक आला क्रिस्म के पत्थरों से बनी हुई थीं, ऐसे पत्थरों से जो चारों तरफ आरी से नाप के ऐन मुताबिक काटे गए थे।

10 बुनियादों के लिए उम्दा क्रिस्म के बड़े बड़े पत्थर इस्तेमाल हुए। बाज़ की लंबाई 12 और बाज़ की 15 फुट थी।

11 इन पर आला क्रिस्म के पत्थरों की दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में देवदार के शहतीर भी लगाए गए।

12 बड़े सहन की चारदीवारी यों बनाई गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया था। जो अंदरूनी सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के घर के बरामदे की दीवारें भी।

रब के घर के सामने के दो खास सतून

13 फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी को बुलाया जिसका नाम हीराम था।

14 उस की माँ इसराईली कबीले नफताली की बेवा थी जबकि उसका बाप सूर का रहनेवाला और पीतल का कारीगर था। हीराम बड़ी हिकमत, समझदारी और महारत से पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस क्रिस्म का काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास आया।

15 पहले उसने पीतल के दो सतून ढाल दिए। हर सतून की ऊँचाई 27 फुट और घेरा 18 फुट था।

16 फिर उसने हर सतून के लिए पीतल का बालाई हिस्सा ढाल दिया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फुट थी।

17 हर बालाई हिस्से को एक दूसरे के साथ खूबसूरती से मिलाई गईं सात जंजीरों से आरास्ता किया गया।

18-20 इन जंजीरों के ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से को पीतल के 200 अनारों से सजाया जो दो क्रतारों में लगाए गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए गए। बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की-सी शकल थी, और यह फूल 6 फुट ऊँचे थे।

21 हीराम ने दोनों सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े किए। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन' और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज़' रखा।

22 बालाई हिस्से सोसन-नुमा थे। चुनाँचे काम मुकम्मल हुआ।

### पीतल का हौज़

23 इसके बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल हौज़ ढाल दिया जिसका नाम 'समुंद्र' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फुट, उसका मुँह 15 फुट चौड़ा और उसका घेरा तकरीबन 45 फुट था।

24 हौज़ के किनारे के नीचे तूँबों की दो कतारें थीं। फ़ी फुट तकरीबन 6 तूँबे थे। तूँबे और हौज़ मिलकर ढाले गए थे।

25 हौज़ को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का स्रख शिमाल की तरफ, तीन का स्रख मगारिब की तरफ, तीन का स्रख जुनूब की तरफ और तीन का स्रख मशरिक की तरफ था। उनके पिछले हिस्से हौज़ की तरफ थे, और हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था।

26 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की तरह बाहर की तरफ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तकरीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तकरीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

### पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ

27 फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लंबाई 6 फुट, चौड़ाई 6 फुट और ऊँचाई साढ़े 4 फुट थी।

28 हर गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से मज़बूत किया गया फ़्रेम था।

29 फ़्रेम के बैस्नी पहलू शेरबबरो, बैलों और कस्बी फ़रिशतों से सजे हुए थे। शेरों और बैलों के ऊपर और नीचे पीतल के सेहरे लगे हुए थे।

30 हर गाड़ी के चार पहिये और दो धुरे थे। यह भी पीतल के थे। चारों कोनों पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे जिन पर बासन रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से सजे हुए थे।

31 फ़्रेम के अंदर जिस जगह बासन को रखा जाता था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फुट थी, और उसका मुँह सवा दो फुट चौड़ा था। उसके बैस्नी पहलू पर चीज़ें कंदा की गई थीं। गाड़ी का फ़्रेम गोल नहीं बल्कि चौरस था।

32 गाड़ी के फ़्रेम के नीचे मज़कूरा चार पहिये थे जो धुरों से जुड़े थे। धुरे फ़्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो फुट चौड़ा था।

33 पहिये रथों के पहियों की मानिंद थे। उनके धुरे, किनारे, तार और नाभें सबके सब पीतल से ढाले गए थे।

34 गाड़ियों के चार कोनों पर दस्ते लगे थे जो फ्रेम के साथ मिलकर ढाले गए थे।

35-36 हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ इंच ऊँचा था। कोनों पर लगे दस्ते और फ्रेम के पहलू हर जगह करूबी फ्रिशतों, शेरबबरों और खजूर के दरख्तों से सजे हुए थे। चारों तरफ सेहरे भी कंदा किए गए।

37 हीराम ने दसों गाड़ियों को एक ही साँचे में ढाला, इसलिए सब एक जैसी थीं।

38 हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन ढाल दिया। हर बासन 6 फुट चौड़ा था, और उसमें 880 लिटर पानी समा जाता था।

39 उसने पाँच गाड़ियाँ रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुंद्र को उसने रब के घर के जूनब-मशरिक में रख दिया।

उस सामान की फहरिस्त जो हीराम ने बनाया

40 हीराम ने बासन, बेलचे और छिडकाव के कटोरे भी बनाए। यों उसने रब के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने जैल की चीज़ें बनाई :

41 दो सतून,

सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,

बालाई हिस्सों पर लगी जंजीरों का डिजायन,

42 जंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ्री बालाई हिस्सा 200 अदद),

43 10 हथगाड़ियाँ,

इन पर के पानी के 10 बासन,

44 हौज़ बनाम समुंद्र,

इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

45 बालटियाँ, बेलचे और छिडकाव के कटोरे।

यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था।

46 बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और जरतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी।

47 इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान  
 48 रब के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :  
 सोने की कुरबानगाह,  
 सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ पड़ी रहती थी,  
 49 ख़ालिस सोने के 10 शमादान जो मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने रखे गए,  
 पाँच दरवाज़े के दहने हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ,  
 सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,  
 सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के औज़ार,  
 50 ख़ालिस सोने के बासन, चराग़ को कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे  
 और प्याले,  
 जलते हुए कोयले के लिए ख़ालिस सोने के बरतन,  
 मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के कब्जे।  
 51 रब के घर की तकमील पर सुलेमान बादशाह ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी  
 तमाम क़ीमती चीज़ें रब के घर के खज़ानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने  
 रब के लिए मखसूस की थीं।

## 8

अहद का संदूक रब के घर में लाया जाता है

1 फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों और क़बीलों और कुंभों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।

2 चुनोंचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने इतानीम \* में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।

3 जब सब जमा हुए तो इमाम रब के संदूक को उठाकर

4 रब के घर में लाए। लावियों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाकात के ख़ैमे को भी उसके तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया।

\* 8:2 सितंबर ता अक्तूबर

5 वहाँ संदूक के सामने सुलेमान बादशाह और बाकी तमाम जमा हुए इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल कुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।

6 इमामों ने रब के अहद का संदूक पिछले यानी मुकद्दसतरीन कमरे में लाकर करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे रख दिया।

7 फ़रिश्तों के पर पूरे संदूक पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे।

8 तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुकद्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वही मौजूद हैं।

9 संदूक में सिर्फ़ पत्थर की वह दो तख़्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था।

10-11 जब इमाम मुकद्दस कमरे से निकलकर सहन में आए तो रब का घर एक बादल से भर गया। इमाम अपनी ख़िदमत अंजाम न दे सके, क्योंकि रब का घर उसके जलाल के बादल से मामूर हो गया था।

12 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, “रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अंधेरे में रहूँगा।

13 यक़ीनन मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक़ है।”

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक्ररि

14 फिर बादशाह ने मुड़कर रब के घर के सामने खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ स्रुव किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

15 “रब इसराईल के खुदा की तारीफ़ हो जिसने वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया,

16 ‘जिस दिन मैं अपनी क़ौम इसराईल को मिसर से निकाल लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने कभी न फ़रमाया कि इसराईली क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए। लेकिन मैंने दाऊद को अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह बनाया है।’

17 मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़ाहिश थी कि रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए।

18 लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं खुश हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है,

19 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।'

20 और वाकई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक अपने बाप दाऊद की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख्त पर बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है।

21 उसमें मैंने उस संदूक के लिए मक़ाम तैयार कर रखा है जिसमें शरीअत की तख्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख्तियाँ जो रब ने हमारे बापदादा से मिसर से निकालते वक़्त बाँधा था।''

रब के घर की मखसूसियत पर सुलेमान की दुआ

22 फिर सुलेमान इसराईल की पूरी जमात के देखते देखते रब की कुरबानगाह के सामने खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर

23 दुआ की,

''ऐ रब इसराईल के खुदा, तुझ जैसा कोई खुदा नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अहद कायम रखता है जिसे तूने अपनी क़ौम के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर जाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं।

24 तूने अपने खादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की है।

25 ऐ रब इसराईल के खुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तूने अपने खादिम दाऊद से की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था, 'अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।'

26 ऐ इसराईल के खुदा, अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तूने अपने खादिम मेरे बाप दाऊद से किया है।

27 लेकिन क्या अल्लाह वाकई ज़मीन पर सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरतीन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है?

28 ऐ रब मेरे खुदा, तो भी अपने खादिम की दुआ और इल्तिजा सुन जब मैं आज तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ

29 कि बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने खुद फ़रमाया, 'यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।' चुनाँचे अपने खादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस मक़ाम की तरफ़ स़ख़ किए हुए करता हूँ।

30 जब हम इस मक़ाम की तरफ़ स़ख़ करके दुआ करें तो अपने खादिम और अपनी क़ौम की इल्लिजा सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

31 अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और उसे यहाँ तेरी कुरबानगाह के सामने लाया जाए ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेकुसूर हूँ

32 तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने खादिमों का इनसाफ़ कर। कुसूरवार को मुजरिम ठहराकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उससे सरज़द हुआ है, और बेकुसूर को बेइलज़ाम करार देकर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमज़ीद करके यहाँ इस घर में तुझसे दुआ और इलतमास करें

34 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उनके बापदादा को दे दिया था।

35 हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ स़ख़ करके तेरे नाम की तमज़ीद करें और तेरी सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ

36 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपने खादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया है।

37 हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए, अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फ़फूँदी, टिङ्गियों या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो,

38 अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढाए और तुझसे इलतमास करे

39 तो आसमान पर अपने तख्त से उनकी फरियाद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह कुछ कर जो ज़रूरी है। हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इनसान के दिल को जानता है।

40 फिर जितनी देर वह उस मुल्क में ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।

41 आइंदा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूर-दराज़ ममालिक से आँगें। अगरचे वह तेरी क्रौम इसराईल के नहीं होंगे

42 तो भी वह तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी कुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के बारे में सुनकर आँगें और इस घर की तरफ़ स्रख करके दुआ करेंगे।

43 तब आसमान पर से उनकी फरियाद सुन लेना। जो भी दरखास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम अक़वाम तेरा नाम जानकर तेरी क्रौम इसराईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

44 हो सकता है तेरी क्रौम के मर्द तेरी हिदायत के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ स्रख करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है

45 तो आसमान पर से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़ में इनसाफ़ कायम रखना।

46 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें कैद करके अपने किसी दूर-दराज़ या करीबी मुल्क में ले जाए।

47 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रूज़ करें और तुझसे इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतों की हैं।'

48 अगर वह ऐसा करके दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रूज़ करें और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ स्रख करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है

49 तो आसमान पर अपने तख्त से उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इनसाफ़ कायम करना,

50 और अपनी कौम के गुनाहों को मुआफ़ कर देना। जिस भी जुर्म से उन्होंने तेरा गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़्श दे कि उन्हें गिरिफ़्तार करनेवाले उन पर रहम करें।

51 क्योंकि यह तेरी ही कौम के अफ़राद हैं, तेरी ही मीरास जिसे तू मिसर के भड़कते भट्टे से निकाल लाया।

52 ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और तेरी कौम इसराईल की फ़रियादों के लिए खुली रहें। जब भी वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो उनकी सुन लेना!

53 क्योंकि तू, ऐ रब कादिरे-मुतलक ने इसराईल को दुनिया की तमाम कौमों से अलग करके अपनी ख़ास मिलकियत बना लिया है। हमारे बापदादा को मिसर से निकालते वक़्त तूने मूसा की मारिफ़त इस हकीकत का एलान किया।”

### आखिरी दुआ और बरकत

54 इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ, क्योंकि दुआ के दौरान उसने रब की कुरबानगाह के सामने अपने घुटने टेके और अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए हुए थे।

55 अब वह इसराईल की पूरी जमात के सामने खड़ा हुआ और बुलंद आवाज़ से उसे बरकत दी,

56 “रब की तमजीद हो जिसने अपने वादे के ऐन मुताबिक़ अपनी कौम इसराईल को आरामो-सुकून फ़राहम किया है। जितने भी ख़ूबसूरत वादे उसने अपने खादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं वह सबके सब पूरे हो गए हैं।

57 जिस तरह रब हमारा ख़ुदा हमारे बापदादा के साथ था उसी तरह वह हमारे साथ भी रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क करे

58 बल्कि हमारे दिलों को अपनी तरफ़ मायल करे ताकि हम उस की तमाम राहों पर चलें और उन तमाम अहक़ाम और हिदायात के ताबे रहें जो उसने हमारे बापदादा को दी हैं।

59 रब के हुज़ूर मेरी यह फ़रियाद दिन-रात रब हमारे ख़ुदा के करीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी कौम का इनसाफ़ कायम रखे और हमारी रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करे।

60 तब तमाम अक़वाम जान लेंगी कि रब ही ख़ुदा है और कि उसके सिवा कोई और माबूद नहीं है।

61 लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे खुदा के पूरे दिल से वफादार रहें। हमेशा उस की हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप आज कर रहे हैं।”

रब के घर की मखसूसियत पर जशन

62-63 फिर बादशाह और तमाम इसराईल ने रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश करके रब के घर को मखसूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को सलामती की कुरबानियों के तौर पर ज़बह किया।

64 उसी दिन बादशाह ने सहन का दरमियानी हिस्सा कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए मखसूस किया। वजह यह थी कि पीतल की कुरबानगाह इतनी कुरबानियाँ पेश करने के लिए छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली कुरबानियों और गल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इसके अलावा सलामती की बेशुमार कुरबानियों की चरबी को भी जलाना था।

65 ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़ते में सुलेमान और तमाम इसराईल ने रब के घर की मखसूसियत मनाई और दूसरे हफ़ते में झोंपड़ियों की ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-दराज़ इलाकों से यरूशलम आए थे, शिमाल में लबो-हमात से लेकर जुन्ब में उस वादी तक जो मिसर की सरहद थी।

66 दो हफ़तों के बाद सुलेमान ने इसराईलियों को सखसत किया। बादशाह को बरकत देकर वह अपने अपने घर चले गए। सब शादमान और दिल से खुश थे कि रब ने अपने खादिम दाऊद और अपनी क़ौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

## 9

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

1 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तकमील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा हुआ।

2 उस वक़्त रब दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ, उस तरह जिस तरह वह जिबऊन में उस पर ज़ाहिर हुआ था।

3 उसने सुलेमान से कहा,

“जो दुआ और इल्तिजा तूने मेरे हुज़ूर की उसे मैंने सुनकर इस इमारत को जो तूने बनाई है अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस कर लिया है। उसमें मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे।

4 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, अपने बाप दाऊद की तरह दियानतदारी और रास्ती से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात की पैरवी करता रहे

5 तो मैं तेरी इसराईल पर हुक्मत हमेशा तक कायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा कायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद की हुक्मत हमेशा तक कायम रहेगी।

6 लेकिन खबरदार! अगर तू या तेरी औलाद मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उनकी खिदमत और परस्तिश करे

7 तो मैं इसराईल को उस मुल्क में से मिटा दूँगा जो मैंने उनको दे दिया था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मखसूसो-मुकद्दस कर लिया है। उस वक़्त इसराईल तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन जाएगा।

8 इस शानदार घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह अपनी हिक़ारत का इज़हार करके पछेंगे, ‘रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुल्क क्यों किया?’

9 तब लोग जवाब देंगे, ‘इसलिए कि गो रब उनका खुदा उनके बापदादा को मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ न आए इसलिए रब ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है।’”

### हीराम की मदद का सिला

10 रब के घर और शाही महल को तामीर करने में 20 साल सर्फ़ हुए थे।

11 उस दौरान सूर का बादशाह हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान चाहता था। जब इमारतें तकमिल तक पहुँच गईं तो सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े में गलील के 20 शहर दे दिए।

12 लेकिन जब हीराम उनका मुआयना करने के लिए सूर से गलील आया तो वह उसे पसंद न आए।

13 उसने सवाल किया, “मेरे भाई, यह कैसे शहर है जो आपने मुझे दिए हैं?” और उसने उस इलाके का नाम काबूल यानी ‘कुछ भी नहीं’ रखा। यह नाम आज तक रायज है।

14 बात यह थी कि हीराम ने इसराईल के बादशाह को तक्ररीबन 4,000 किलोग्राम सोना भेजा था।

### सुलेमान की मुख्तलिफ़ मुहिमात

15 सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए बेगारी लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उसने न सिर्फ़ रब का घर, अपना महल, इर्दगिर्द के चबूतरे और यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर हसूर, मजिदो और जज़र को भी।

16 जज़र शहर पर मिसर के बादशाह फिरौन ने हमला करके कब्ज़ा कर लिया था। उसके कनानी बाशिंदों को क़त्ल करके उसने पूरे शहर को जला दिया था। जब सुलेमान की फिरौन की बेटी से शादी हुई तो मिसरी बादशाह ने जहेज़ के तौर पर उसे यह इलाका दे दिया।

17 अब सुलेमान ने जज़र का शहर दुबारा तामीर किया। इसके अलावा उसने नशेबी बैत-हौरून,

18 बालात और रेगिस्तान के शहर तदमूर में बहुत-सा तामीरी काम कराया।

19 सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए। जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था वह उसने बनवाया।

20-21 जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली नहीं थे बल्कि अमोरी, हिती, फ़रिज़्जी, हिब्वी और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर कब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन कौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना पड़ता है।

22 लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों में से किसी को भी ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फ़ौजी, सरकारी अफ़सर, फ़ौज के अफ़सर और रथों के फ़ौजी बन गए, और उन्हें उसके रथों और घोड़ों पर मुक़रर किया गया।

23 सुलेमान के तामीरी काम पर भी 550 इसराईली मुकर्रर थे जो जिलों पर मुकर्रर अफसरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की निगरानी करते थे।

24 जब फिरौन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतकिल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था तो वह इर्दगिर्द के चबूतरे बनवाने लगा।

25 सुलेमान साल में तीन बार रब को भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करता था। वह उन्हें रब के घर की उस कुरबानगाह पर चढाता था जो उसने रब के लिए बनवाई थी। साथ साथ वह बखूर भी जलाता था। यों उसने रब के घर को तकमील तक पहुँचाया।

26 इसके अलावा सुलेमान बादशाह ने बहरी जहाज़ों का बड़ा भी बनवाया। इस काम का मरकज़ ऐलात के करीब शहर अरस्यून-जाबर था। यह बंदरगाह मुल्के-अदोम में बहरे-कुलजुम के साहिल पर है।

27 हीराम बादशाह ने उसे तजरबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ।

28 उन्होंने ओफ्रीर तक सफ़र किया और वहाँ से तकरीबन 14,000 किलोग्राम सोना सुलेमान के पास ले आए।

## 10

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

1 सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना और यह भी कि उसने रब के नाम के लिए क्या कुछ किया है तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की दानिशमंदी जाँच ले।

2 वह निहायत बड़े काफिले के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान, कसरत के सोने और कीमती जवाहर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाकात हुई तो उसने उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके जहन में थे।

3 सुलेमान उसके हर सवाल का जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि बादशाह उसका मतलब मलिका को बता न सकता।

4 सबा की मलिका सुलेमान की वसी हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई।

5 उसने बादशाह की मेजों पर के मुख्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की खिदमत, उनकी शानदार वरदियों और साक्रियों पर भी गौर किया। जब उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह कुरबानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

6 वह बोल उठी, “वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे में सुना था वह दुस्त है।

7 जब तक मैंने खुद आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यक़ीन नहीं आता था। बल्कि हक़ीक़त में मुझे आपके बारे में आधा भी नहीं बताया गया था। आपकी हिकमत और दौलत उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं।

8 आपके लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं!

9 रब आपके खुदा की तमज़ीद हो जिसने आपको पसंद करके इसराईल के तख़्त पर बिठाया है। रब इसराईल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी लिए उसने आपको बादशाह बना दिया है ताकि इनसाफ़ और रास्तबाज़ी कायम रखें।”

10 फिर मलिका ने सुलेमान को तक्ररीबन 4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान और जवाहर दिए। बाद में कभी भी उतना बलसान इसराईल में नहीं लाया गया जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

11 हीराम के जहाज़ ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने क्रीमती लकड़ी और जवाहर भी बड़ी मिक़दार में इसराईल तक पहुँचाए।

12 जितनी क्रीमती लकड़ी उन दिनों में दरामद हुई उतनी आज तक कभी यहदाह में नहीं लाई गई। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए कटहरे बनवाए। यह मौसीकारों के सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

13 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की मलिका को बहुत-से तोहफ़े दिए। नीज़, जो कुछ भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

### सुलेमान की दौलत और शोहरत

14 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उसका वजन तकरीबन 23,000 किलोग्राम था।

15 इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरो, अरब बादशाहों और ज़िलों के अफसरों से मिलते थे।

16-17 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँटा गया। हर बड़ी ढाल के लिए तकरीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए तकरीबन साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का जंगल' नामी महल में महफूज़ रखा।

18 इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता एक बड़ा तख्त बनवाया जिस पर खालिस सोना चढ़ाया गया।

19-20 तख्त की पुशत का ऊपर का हिस्सा गोल था, और उसके हर बाजू के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढी पर चढ़कर उस पर बैठा था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। इस किस्म का तख्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता था।

21 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि 'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बरतन खालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर नहीं थी।

22 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम के जहाज़ों के साथ मिलकर मुख्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।

23 सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के तमाम बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी।

24 पूरी दुनिया उससे मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह हिकमत सुन ले जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल दी थी।

25 साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न कोई तोहफ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन, क़ीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और खच्चर मिलते रहे।

26 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मखसूस किए गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे।

27 बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गईं और देवदार की क्रीमती लकड़ी यहदाह के मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके की अंजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गईं।

28 बादशाह अपने घोड़े मिसर और कुए यानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें खरीद लाते थे।

29 बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की क्रीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े की क्रीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हिली और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

## 11

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

1 लेकिन सुलेमान बहुत-सी गैरमुल्की खवातीन से मुहब्बत करता था। फिरौन की बेटी के अलावा उस की शादी मोआबी, अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और हिली औरतों से हुई।

2 इन क्रीमों के बारे में रब ने इसराइलियों को हुक्म दिया था, “न तुम इनके घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों में आँ, वरना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की तरफ मायल कर देंगे।” तो भी सुलेमान बड़े प्यार से अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा।

3 उस की शाही खानदानों से ताल्लुक रखनेवाली 700 बीवियाँ और 300 दाशताएँ थीं। इन औरतों ने आखिरकार उसका दिल रब से दूर कर दिया।

4 जब वह बूढ़ा हो गया तो उन्होंने उसका दिल दीगर माबूदों की तरफ मायल कर दिया। यों वह बुढ़ापे में अपने बाप दाऊद की तरह पूरे दिल से रब का वफादार न रहा।

5 बल्कि सैदानियों की देवी अस्तारात और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने लगा।

6 गरज उसने ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था। वह वफादारी न रही जिससे उसके बाप दाऊद ने रब की खिदमत की थी।

7 यरूशलम के मशरिक में सुलेमान ने एक पहाड़ी पर दो मंदिर बनाए, एक मोआब के धिनौने देवता कमोस के लिए और एक अम्मोन के धिनौने देवता मलिक यानी मिलकूम के लिए।

8 ऐसे मंदिर उसने अपनी तमाम गैरमुल्की बीवियों के लिए तामीर किए ताकि वह अपने देवताओं को बखूर और ज़बह की कुरबानियाँ पेश कर सकें।

9 रब को सुलेमान पर बड़ा गुस्सा आया, क्योंकि वह इसराईल के खुदा से दूर हो गया था, हालाँकि रब उस पर दो बार ज़ाहिर हुआ था।

10 गो उसने उसे दीगर माबूदों की पूजा करने से साफ मना किया था तो भी सुलेमान ने उसका हुक्म न माना।

11 इसलिए रब ने उससे कहा, “चूँकि तू मेरे अहद और अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी नहीं गुज़ारता, इसलिए मैं बादशाही को तुझसे छीनकर तेरे किसी अफसर को दूँगा। यह बात यक़ीनी है।

12 लेकिन तेरे बाप दाऊद की खातिर मैं यह तेरे जीते-जी नहीं करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे ही से छीनूँगा।

13 और मैं पूरी ममलकत उसके हाथ से नहीं लूँगा बल्कि अपने खादिम दाऊद और अपने चुने हुए शहर यरूशलम की खातिर उसके लिए एक क़बीला छोड़ दूँगा।”

### सुलेमान के दुश्मन हदद और रज़ून

14 फिर रब ने अदोम के शाही खानदान में से एक आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो सुलेमान का सख्त मुखालिफ बन गया।

15 वह यों सुलेमान का दुश्मन बन गया कि चंद साल पहले जब दाऊद ने अदोम को शिकस्त दी तो उसका फ़ौजी कमाँडर योआब मैदाने-जंग में पड़ी तमाम इसराईली लाशों को दफनाने के लिए अदोम आया। जहाँ भी गया वहाँ उसने हर अदोमी मर्द को मार डाला।

16 वह छः माह तक अपने फ़ौजियों के साथ हर जगह फिरा और तमाम अदोमी मर्दों को मारता गया।

17 हदद उस वक़्त बच गया और अपने बाप के चंद एक सरकारी अफसरों के साथ फ़रार होकर मिसर में पनाह ले सका।

18 रास्ते में उन्हें दश्ते-फ़ारान के मुल्के-मिदियान से गुज़रना पड़ा। वहाँ वह मज़ीद कुछ आदमियों को जमा कर सके और सफ़र करते करते मिसर पहुँच गए। हदद मिसर के बादशाह फिरौन के पास गया तो उसने उसे घर, कुछ ज़मीन और ख़ुराक मुहैया की।

19 हदद फिरौन को इतना पसंद आया कि उसने उस की शादी अपनी बीवी मलिका तहफनीस की बहन के साथ कराई।

20 इस बहन के बेटा पैदा हुआ जिसका नाम जनुबत रखा गया। तहफनीस ने उसे शाही महल में पाला जहाँ वह फिरौन के बेटों के साथ परवान चढ़ा।

21 एक दिन हदद को खबर मिली कि दाऊद और उसका कमाँडर योआब फौत हो गए हैं। तब उसने फिरौन से इजाज़त माँगी, “मैं अपने मुल्क लौट जाना चाहता हूँ, बराहे-करम मुझे जाने दें।”

22 फिरौन ने एतराज़ किया, “यहाँ क्या कमी है कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते हो?” हदद ने जवाब दिया, “मैं किसी भी चीज़ से महरूम नहीं रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने दीजिए।”

23 अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान के खिलाफ बरपा किया। उसका नाम रज़ून बिन इलियदा था। पहले वह ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की खिदमत अंजाम देता था, लेकिन एक दिन उसने अपने मालिक से भागकर

24 कुछ आदमियों को अपने गिर्द जमा किया और डाकुओं के जत्थे का सरगना बन गया। जब दाऊद ने ज़ोबाह को शिकस्त दे दी तो रज़ून अपने आदमियों के साथ दमिश्क गया और वहाँ आबाद होकर अपनी हुकूमत कायम कर ली।

25 होते होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया। वह इसराईलियों से नफ़रत करता था और सुलेमान के जीते-जी इसराईल का खास दुश्मन बना रहा। हदद की तरह वह भी इसराईल को तंग करता रहा।

### यरुबियाम और अखियाह नबी

26 सुलेमान का एक सरकारी अफ़सर भी उसके खिलाफ उठ खड़ा हुआ। उसका नाम यरुबियाम बिन नबात था, और वह इफ़राईम के शहर सरीदा का था। उस की माँ सरुआ बेवा थी।

27 जब यरुबियाम बागी हुआ तो उन दिनों में सुलेमान इर्दगिर्द के चबूतरे और फ़सील का आखिरी हिस्सा तामीर कर रहा था।

28 उसने देखा कि यरुबियाम माहिर और मेहनती जवान है, इसलिए उसने उसे इफ़राईम और मनस्सी के कबीलों के तमाम बेगार में काम करनेवालों पर मुक़र्रर किया।

29 एक दिन यरुबियाम शहर से निकल रहा था तो उस की मुलाकात सैला के नबी अखियाह से हुई। अखियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था। खुले मैदान में जहाँ कोई और नज़र न आया

30 अखियाह ने अपनी चादर को पकड़कर बारह टुकड़ों में फाड़ लिया

31 और यरुबियाम से कहा,

“चादर के दस टुकड़े अपने पास रखें! क्योंकि रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, इस वक़्त मैं इसराईल की बादशाही को सुलेमान से छीननेवाला हूँ। जब ऐसा होगा तो मैं उसके दस क़बीले तैरे हवाले कर दूँगा।

32 एक ही क़बीला उसके पास रहेगा, और यह भी सिर्फ़ उसके बाप दाऊद और उस शहर की खातिर जिसे मैंने तमाम क़बीलों में से चुन लिया है।

33 इस तरह मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्योंकि वह और उसके लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी अस्तारात की, मोआबियों के देवता कमोस की और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने लगे हैं। वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही कुछ करते हैं जो मुझे बिलकुल नापसंद है। जिस तरह दाऊद मेरे अहकाम और हिदायात की पैरवी करता था उस तरह उसका बेटा नहीं करता।

34 लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान के हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने खादिम दाऊद की खातिर जिसे मैंने चुन लिया और जो मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते-जी यह नहीं करूँगा। वह खुद बादशाह रहेगा,

35 लेकिन उसके बेटे से मैं बादशाही छीनकर दस क़बीले तैरे हवाले कर दूँगा।

36 सिर्फ़ एक क़बीला सुलेमान के बेटे के सुपुर्द रहेगा ताकि मेरे खादिम दाऊद का चराग़ हमेशा मेरे हुज़ूर यरुशलम में जलता रहे, उस शहर में जो मैंने अपने नाम की सुक़नत के लिए चुन लिया है।

37 लेकिन तुझे, ऐ यरुबियाम, मैं इसराईल पर बादशाह बना दूँगा। जो कुछ भी तेरा जी चाहता है उस पर तू हुकूमत करेगा।

38 उस वक़्त अगर तू मेरे खादिम दाऊद की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी राहों पर चलेगा और मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहकर वह कुछ करेगा जो मुझे पसंद है तो फिर मैं तैरे साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही ख़ानदान उतना ही कायमो-दायम कर दूँगा जितना मैंने दाऊद का किया है, और इसराईल तैरे ही हवाले रहेगा।

39 यों मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा नहीं होगी।”

40 इसके बाद सुलेमान ने यरुबियाम को मरवाने की कोशिश की, लेकिन यरुबियाम ने फ़रार होकर मिसर के बादशाह सीसक के पास पनाह ली। वहाँ वह सुलेमान की मौत तक रहा।

### सुलेमान की मौत

41 सुलेमान की ज़िंदगी और हिकमत के बारे में मज़ीद बातें ‘सुलेमान के आमाल’ की किताब में बयान की गई हैं।

42 सुलेमान 40 साल पूरे इसराईल पर हुकूमत करता रहा। उसका दास्त-हुकूमत यरुशलम था।

43 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरुशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम तख़्तनशीन हुआ।

## 12

### शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

1 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि वहाँ तमाम इसराईली उसे बादशाह मुकर्रर करने के लिए जमा हो गए थे।

2 यरुबियाम बिन नबात यह खबर सुनते ही मिसर से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह ली थी इसराईल वापस आया।

3 इसराईलियों ने उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरुबियाम के साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने बादशाह से कहा,

4 “जो जुआ आपके बाप ने हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था, और जो वक्रत और पैसे हमें बादशाह की खिदमत में सर्फ़ करने थे वह नाकाबिले-बरदाशत थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम खुशी से आपकी खिदमत करेंगे।”

5 रहुबियाम ने जवाब दिया, “मुझे तीन दिन की मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।” चुनाँचे लोग चले गए।

6 फिर रहुबियाम बादशाह ने उन बुजुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह की खिदमत करते रहे थे। उसने पूछा, “आपका क्या खयाल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?”

7 बुजुर्गों ने जवाब दिया, “हमारा मशवरा है कि इस वक्त उनका खादिम बनकर उनकी खिदमत करें और उन्हें नरम जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार खादिम बने रहेंगे।”

8 लेकिन रहुबियाम ने बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके उस की खिदमत में हाज़िर उन जवानों से मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे।

9 उसने पूछा, “मैं इस कौम को क्या जवाब दूँ? यह तकाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।”

10 जो जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा, “अच्छा, यह लोग तकाज़ा कर रहे हैं कि आपके बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता देना, ‘मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से ज़्यादा मोटी है!’

11 बेशक जो जुआ उसने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!”

12 तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम इसराईलियों के साथ रहुबियाम का फ़ैसला सुनने के लिए वापस आया

13 तो बादशाह ने उन्हें सख्त जवाब दिया। बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके

14 उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, “बेशक जो जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!”

15 यों रब की मरज़ी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अखियाह ने यरुबियाम बिन नबात को बताई थी।

16 जब इसराईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ दाऊद, अब अपना घर खुद सँभाल लो!” यह कहकर वह सब चले गए।

17 सिर्फ़ यहदाह के कबीले के शहरों में रहनेवाले इसराईली रहुबियाम के तहत रहे।

18 फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुकर्रर अफ़सर अदनीराम को शिमाली कबीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देखकर तमाम लोगों ने उसे

संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भागकर यरूशालम पहुँच गया।

19 यों इसराईल के शिमाली कबीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

20 जब खबर शिमाली इसराईल में फैली कि यरूबियाम मिसर से वापस आ गया है तो लोगों ने क्रौमी इजलास मुनअक्रिद करके उसे बुलाया और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ यहदाह का कबीला रहुबियाम और उसके घराने का वफादार रहा।

रहुबियाम को इसराईल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 जब रहुबियाम यरूशालम पहुँचा तो उसने यहदाह और बिनयमीन के कबीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इसराईल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए इसराईल पर दुबारा काबू पाएँ।

22 लेकिन ऐन उस वक़्त मर्दे-खुदा समायाह को अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम मिला,

23 “यहदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान, यहदाह और बिनयमीन के तमाम अफ़राद और बाक़ी लोगों को इत्तला दे,

24 ‘रब फ़रमाता है कि अपने इसराईली भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक़म पर हुआ है।’”

तब वह रब की सुनकर अपने अपने घर वापस चले गए।

यरूबियाम के सोने के बछड़े

25 यरूबियाम इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के शहर सिकम को मज़बूत करके वहाँ आबाद हुआ। बाद में उसने फ़नुएल शहर की भी क़िलाबंदी की और वहाँ मुंतक़िल हुआ।

26 लेकिन दिल में अंदेशा रहा कि कहीं इसराईल दुबारा दाऊद के घराने के हाथ में न आ जाए।

27 उसने सोचा, “लोग बाकायदगी से यरूशालम आते-जाते हैं ताकि वहाँ रब के घर में अपनी क़ुरबानियाँ पेश करें। अगर यह सिलसिला तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता उनके दिल दुबारा यहदाह के बादशाह रहुबियाम की तरफ़ मायल हो जाएंगे। आख़िरकार वह मुझे क़त्ल करके रहुबियाम को अपना बादशाह बना लेंगे।”

28 अपने अफ़सरों के मशवरे पर उसने सोने के दो बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उसने एलान किया, “हर कुरबानी के लिए यरूशलम जाना मुश्किल है! ऐ इसराईल देख, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

29 एक बुत उसने जुनूबी शहर बैतेल में खड़ा किया और दूसरा शिमाली शहर दान में।

30 यों यरूबियाम ने इसराईलियों को गुनाह करने पर उकसाया। लोग दान तक सफ़र किया करते थे ताकि वहाँ के बुत की पूजा करें।

31 इसके अलावा यरूबियाम ने बहुत-सी ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए उसने ऐसे लोग मुकर्रर किए जो लावी के कबीले के नहीं बल्कि आम लोग थे।

32 उसने एक नई ईद भी रायज की जो यहदाह में मनानेवाली झोंपड़ियों की ईद की मानिंद थी। यह ईद आठवें माह \* के पंद्रहवें दिन मनाई जाती थी। बैतेल में उसने खुद कुरबानगाह पर जाकर अपने बनवाए हुए बछड़ों को कुरबानियाँ पेश कीं, और वहीं उसने अपने उन मंदिरों के इमामों को मुकर्रर किया जो उसने ऊँची जगहों पर तामीर किए थे।

नबी यरूबियाम को बुरी खबर पहुँचाता है

33 चुनोंचे यरूबियाम के मुकर्ररकरदा दिन यानी आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इसराईलियों ने बैतेल में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के सामने यरूबियाम कुरबानगाह पर चढ़ गया ताकि कुरबानियाँ पेश करे।

## 13

1 वह अभी कुरबानगाह के पास खड़ा अपनी कुरबानियाँ पेश करना ही चाहता था कि एक मर्दे-खुदा आन पहुँचा। रब ने उसे यहदाह से बैतेल भेज दिया था।

2 बुलंद आवाज़ से वह कुरबानगाह से मुखातिब हुआ, “ऐ कुरबानगाह! ऐ कुरबानगाह! रब फ़रमाता है, ‘दाऊद के घराने से बेटा पैदा होगा जिसका नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह उन इमामों को कुरबान कर देगा जो ऊँची जगहों के मंदिरों में खिदमत करते और यहाँ कुरबानियाँ पेश करने के लिए आते हैं। तुझ पर इनसानों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी।”

\* 12:32 अक्तूबर ता नवंबर

3 फिर मर्दे-खुदा ने इलाही निशान भी पेश किया। उसने एलान किया, “एक निशान साबित करेगा कि रब मेरी मारिफत बात कर रहा है! यह कुरबानगाह फट जाएगी, और इस पर मौजूद चरबी मिली राख ज़मीन पर बिखर जाएगी।”

4 यरुबियाम बादशाह अब तक कुरबानगाह के पास खड़ा था। जब उसने बैतेल की कुरबानगाह के खिलाफ मर्दे-खुदा की बात सुनी तो वह हाथ से उस की तरफ इशारा करके गरजा, “उसे पकड़ो!” लेकिन ज्योंही बादशाह ने अपना हाथ बढ़ाया वह सूख गया, और वह उसे वापस न खींच सका।

5 उसी लमहे कुरबानगाह फट गई और उस पर मौजूद राख ज़मीन पर बिखर गई। बिलकुल वही कुछ हुआ जिसका एलान मर्दे-खुदा ने रब की तरफ से किया था।

6 तब बादशाह इलतमास करने लगा, “रब अपने खुदा का गुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ करें ताकि मेरा हाथ बहाल हो जाए।” मर्दे-खुदा ने उस की शफ़ाअत की तो यरुबियाम का हाथ फौरन बहाल हो गया।

7 तब यरुबियाम बादशाह ने मर्दे-खुदा को दावत दी, “आएँ, मेरे घर में खाना खाकर ताज़ादम हो जाएँ। मैं आपको तोहफ़ा भी दूँगा।”

8 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं आपके पास नहीं आऊँगा, चाहे आप मुझे अपनी मिलकियत का आधा हिस्सा क्यों न दें। मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा, न कुछ पियूँगा।

9 क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया है, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतेल पहुँचा है’।”

10 यह कहकर वह फरक रास्ता इख्तियार करके अपने घर के लिए रवाना हुआ।

### नबी की नाफ़रमानी

11 बैतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उसके बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्होंने उसे सब कुछ कह सुनाया जो मर्दे-खुदा ने बैतेल में किया और यरुबियाम बादशाह को बताया था।

12 बाप ने पूछा, “वह किस तरफ़ गया?” बेटों ने उसे वह रास्ता बताया जो यहदाह के मर्दे-खुदा ने लिया था।

13 बाप ने हुक्म दिया, “मेरे गधे पर जल्दी से ज़ीन कसो!” बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर बैठकर

14 मर्दे-खुदा को ढूँडने गया।

चलते चलते मर्दे-खुदा बलूत के दरख्त के साये में बैठा नज़र आया। बुजुर्ग ने पूछा, “क्या आप वही मर्दे-खुदा हैं जो यहदाह से बैतेल आए थे?” उसने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।”

15 बुजुर्ग नबी ने उसे दावत दी, “आएँ, मेरे साथ। मैं घर में आपको कुछ खाना खिलाता हूँ।”

16 लेकिन मर्दे-खुदा ने इनकार किया, “नहीं, न मैं आपके साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ खाने-पीने की इजाज़त है।

17 क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतेल पहुँचा है’।”

18 बुजुर्ग नबी ने एतराज़ किया, “मैं भी आप जैसा नबी हूँ! एक फ़रिश्ते ने मुझे रब का नया पैग़ाम पहुँचाकर कहा, ‘उसे अपने साथ घर ले जाकर रोटी खिला और पानी पिला’।” बुजुर्ग झूट बोल रहा था,

19 लेकिन मर्दे-खुदा उसके साथ वापस गया और उसके घर में कुछ खाया और पिया।

20 वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुजुर्ग पर रब का कलाम नाज़िल हुआ।

21 उसने बुलंद आवाज़ से यहदाह के मर्दे-खुदा से कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तूने रब के कलाम की खिलाफ़वरज़ी की है! जो हुक्म रब तेरे खुदा ने तुझे दिया था वह तूने नज़रंदाज़ किया है।

22 गो उसने फ़रमाया था कि यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तूने वापस आकर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है। इसलिए मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की कब्र में दफ़नाया नहीं जाएगा’।”

23 खाने के बाद बुजुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा गया और मर्दे-खुदा को उस पर बिठाया गया।

24 वह दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे मार डाला। लेकिन उसने लाश को न छेड़ा बल्कि वह वही रास्ते में पड़ी रही जबकि गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े रहे।

25 कुछ लोग वहाँ से गुजरे। जब उन्होंने लाश को रास्ते में पड़े और शेरबबर को उसके पास खड़े देखा तो उन्होंने बैतेल जहाँ बुजुर्ग नबी रहता था आकर लोगों को इत्तला दी।

26 जब बुजुर्ग को खबर मिली तो उसने कहा, “वही मर्दे-खुदा है जिसने रब के फ़रमान की खिलाफ़वरज़ी की। अब वह कुछ हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी उसने उसे शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह उसे फाड़कर मार डाले।”

27 बुजुर्ग ने अपने बेटों को गधे पर जीन कसने का हुक्म दिया,

28 और वह उस पर बैठकर रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि लाश अब तक रास्ते में पड़ी है और गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े हैं। शेरबबर ने न लाश को छोड़ा और न गधे को फाड़ा था।

29 बुजुर्ग नबी ने लाश को उठाकर अपने गधे पर रखा और उसे बैतेल लाया ताकि उसका मातम करके उसे वहाँ दफ़नाए।

30 उसने लाश को अपनी खानदानी कब्र में दफन किया, और लोगों ने “हाय, मेरे भाई” कहकर उसका मातम किया।

31 जनाज़े के बाद बुजुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा, “जब मैं कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्दे-खुदा की कब्र में दफनाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों के पास ही रखें।

32 क्योंकि जो बातें उसने रब के हुक्म पर बैतेल की कुरबानगाह और सामरिया के शहरों की ऊँची जगहों के मंदिरों के बारे में की हैं वह यकीनन पूरी हो जाएँगी।”

यरुबियाम फिर भी नाफ़रमान रहता है

33 इन वाक़ियात के बावजूद यरुबियाम अपनी शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के मंदिरों में खिदमत करने के लिए मखसूस करता था।

34 यरुबियाम के घराने के इस संगीन गुनाह की वजह से वह आखिरकार तबाह हुआ और रूए-ज़मीन पर से मिट गया।

## 14

यरुबियाम को इलाही सज़ा मिलती है

1 एक दिन यरुबियाम का बेटा अबियाह बहुत बीमार हुआ।

2 तब यरुबियाम ने अपनी बीवी से कहा, “जाकर अपना भेस बदलें ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर सैला जाएँ। वहाँ अखियाह नबी रहता है जिसने मुझे इतला दी थी कि मैं इस क्रौम का बादशाह बन जाऊँगा।

3 उसके पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट और शहद का मरतबान ले जाएँ। वह आदमी आपको ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या हो जाएगा।”

4 चुनाँचे यरुबियाम की बीवी अपना भेस बदलकर रवाना हुई और चलते चलते सैला में अखियाह के घर पहुँच गई। अखियाह उम्रसीदा होने के बाइस देख नहीं सकता था।

5 लेकिन रब ने उसे आगाह कर दिया, “यरुबियाम की बीवी तुझसे मिलने आ रही है ताकि अपने बीमार बेटे के बारे में मालूमात हासिल करे। लेकिन वह अपना भेस बदलकर आएगी ताकि उसे पहचाना न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया कि उसे क्या जवाब देना है।

6 जब अखियाह ने औरत के कदमों की आहट सुनी तो बोला, “यरुबियाम की बीवी, अंदर आएँ! रूप भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आपको बुरी खबर पहुँचानी है।

7 जाएँ, यरुबियाम को रब इसराईल के खुदा की तरफ से पैगाम दें, “मैंने तुझे लोगों में से चुनकर खड़ा किया और अपनी क्रौम इसराईल पर बादशाह बना दिया।

8 मैंने बादशाही को दाऊद के घराने से छीनकर तुझे दे दिया। लेकिन अफ़सोस, तू मेरे खादिम दाऊद की तरह जिंदगी नहीं गुज़ारता जो मेरे अहकाम के ताबे रहकर पूरे दिल से मेरी पैरवी करता रहा और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे पसंद था।

9 जो तुझसे पहले थे उनकी निसबत तूने कहीं ज्यादा बदी की, क्योंकि तूने बुत ढालकर अपने लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यों मुझे तैश दिलाया। चूँकि तूने अपना मुँह मुझसे फेर लिया

10 इसलिए मैं तेरे खानदान को मुसीबत में डाल दूँगा। इसराईल में मैं यरुबियाम के तमाम मर्दों को हलाक कर दूँगा, खाह वह बच्चे हों या बालिग। जिस तरह गोबर को झाड़ू देकर दूर किया जाता है उसी तरह यरुबियाम के घराने का नामो-निशान मिट जाएगा।

11 तुममें से जो शहर में मरेगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे। क्योंकि यह रब का फ़रमान है।”

12 फिर अखियाह ने यरुबियाम की बीवी से कहा, “आप अपने घर वापस चली जाँ। ज्योंही आप शहर में दाखिल होंगी लड़का फ़ौत हो जाएगा।

13 पूरा इसराईल उसका मातम करके उसे दफ़न करेगा। वह आपके खानदान का वाहिद फ़रद होगा जिसे सहीह तौर से दफ़नाया जाएगा। क्योंकि रब इसराईल के ख़ुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ पाया जो उसे पसंद था।

14 रब इसराईल पर एक बादशाह मुकर्रर करेगा जो यरुबियाम के खानदान को हलाक करेगा। आज ही से यह सिलसिला शुरू हो जाएगा।

15 रब इसराईल को भी सज़ा देगा, क्योंकि वह यसीरत देवी के खंबे बनाकर उनकी पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को तैश दिलाते रहे हैं, इसलिए वह उन्हें मारेगा, और वह पानी में सरकंडे की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें इस अच्छे मुल्क से उखाड़कर दरियाए-फ़ुरात के पार मुंतशिर कर देगा।

16 यों वह इसराईल को उन गुनाहों के बाइस तर्क करेगा जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया है।”

17 यरुबियाम की बीवी तिरज़ा में अपने घर वापस चली गई। और घर के दरवाज़े में दाखिल होते ही उसका बेटा मर गया।

18 तमाम इसराईल ने उसे दफ़नाकर उसका मातम किया। सब कुछ वैसे हुआ जैसे रब ने अपने खादिम अखियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था।

### यरुबियाम की मौत

19 बाक़ी जो कुछ यरुबियाम की ज़िंदगी के बारे में लिखा है वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उस किताब में पढा जा सकता है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उसने कौन कौन-सी जंगें कीं।

20 यरुबियाम 22 साल बादशाह रहा। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा नदब तख़्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह रहुबियाम

21 यहदाह में रहुबियाम बिन सुलेमान हुकूमत करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ और 17 साल बादशाह रहा। उसका दास्त-हुकूमत यरुशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली कबीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम कायम करे।

22 लेकिन यहूदाह के बाशिंदे भी ऐसी हरकतें करते थे जो रब को नापसंद थीं। अपने गुनाहों से वह उसे तैश दिलाते रहे, क्योंकि उनके यह गुनाह उनके बापदादा के गुनाहों से कहीं ज्यादा संगीन थे।

23 उन्होंने भी ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए। हर ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख्त के साये में उन्होंने मखसूस पत्थर या यसीरत देवी के खंबे खड़े किए,

24 यहाँ तक कि मंदिरों में जिस्मफरोश मर्द और औरतें थे। गरज़, उन्होंने उन कौमों के तमाम धिनौने रस्मो-रिवाज अपना लिए जिनको रब ने इसराईलियों के आगे आगे निकाल दिया था।

25 रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें साल में मिसर के बादशाह सीसकन ने यरूशलम पर हमला करके

26 रब के घर और शाही महल के तमाम खज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं।

27 इनकी जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें उन मुहाफिज़ों के अफसरों के सुपर्द किया जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते थे।

28 जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफिज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

29 बाक़ी जो कुछ रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है।

30 दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही।

31 जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। फिर रहुबियाम का बेटा अबियाह तख्तनशीन हुआ।

## 15

### यहूदाह का बादशाह अबियाह

1 अबियाह इसराईल के बादशाह यरुबियाम बिन नबात की हुकूमत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना।

2 वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बित अबीसलूम थी।

3 अबियाह से वही गुनाह सरज़द हुए जो उसके बाप ने किए थे, और वह पूरे दिल से रब अपने खुदा का वफ़ादार न रहा। गो वह इसमें अपने परदादा दाऊद से फ़रक था।

4 तो भी रब उसके खुदा ने अबियाह का यरूशलम में चराग जलने दिया। दाऊद की खातिर उसने उसे जा-नशीन अता किया और यरूशलम को कायम रखा,

5 क्योंकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो रब को पसंद था। जीते-जी वह रब के अहकाम के ताबे रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उसने ऊरियाह हिती के सिलसिले में गलत कदम उठाए थे।

6 रहुबियाम और यरुबियाम के दरमियान की जंग अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही।

7 बाकी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है।

8 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफन किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह आसा

9 आसा इसराईल के बादशाह यरुबियाम के 20वें साल में यहदाह का बादशाह बन गया।

10 उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था। माँ का नाम माका था, और वह अबीसलूम की बेटी थी।

11 अपने परदादा दाऊद की तरह आसा भी वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था।

12 उसने उन जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों को निकाल दिया जो मंदिरों में नाम-निहाद खिदमत करते थे और उन तमाम बुतों को तबाह कर दिया जो उसके बापदादा ने बनाए थे।

13 और गो उस की माँ बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख रखती थी, ताहम आसा ने यह ओहदा खत्म कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का धिनौना खंबा बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर वादीए-किदरोन में जला दिया।

14 अफ़सोस कि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। तो भी आसा जीते-जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा।

15 सोना-चाँदी और बाकी जितनी चीजें उसके बाप और उसने रब के लिए मखसूस की थीं उन सबको वह रब के घर में लाया।

16 यहूदाह के बादशाह आसा और इसराईल के बादशाह बाशा के दरमियान ज़िंदगी-भर जंग जारी रही।

17 एक दिन बाशा बादशाह ने यहूदाह पर हमला करके रामा शहर की किलाबंदी की। मकसद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में दाखिल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।

18 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा। बिन-हदद का बाप ताबरिमोन बिन हज़यून था, और उसका दास्ल-हुकूमत दमिशक था। आसा ने रब के घर और शाही महल के खज़ानों का तमाम बचा हुआ सोना और चाँदी वफ़द के सुपर्द करके दमिशक के बादशाह को पैगाम भेजा,

19 “मेरा आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ अहद था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तोहफ़ा क़बूल करके इसराईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद मनसूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल जाए।”

20 बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उसने अपने फ़ौजी अफ़सरों को इसराईल के शहरों पर हमला करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून, दान, अबील-बैत-माका, तमाम किन्नरत और नफ़ताली पर क़ब्ज़ा कर लिया।

21 जब बाशा को इसकी ख़बर मिली तो वह रामा की किलाबंदी करने से बाज़ आया और तिरज़ा वापस चला गया।

22 फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की किलाबंदी करना चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पड़ा, एक को भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा ने बिनयमीन के शहर जिबा और मिसफ़ाह की किलाबंदी की।

23 बाकी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उसमें उस की कामयाबियों और उसके तामीर किए गए शहरों का ज़िक्र है। बुढापे में उसके पाँवों को बीमारी लग गई।

24 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यहसफत उस की जगह तख्तनशीन हुआ।

### इसराईल का बादशाह नदब

25 नदब बिन यरूबियाम यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था।

26 उसका तर्जे-जिंदगी रब को पसंद नहीं था, क्योंकि वह अपने बाप के नमूने पर चलता रहा। जो बदी यरूबियाम ने इसराईल को करने पर उकसाया था उससे नदब भी दूर न हुआ।

27-28 एक दिन जब नदब इसराईली फौज के साथ फिलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए हुए था तो इशकार के कबीले के बाशा बिन अखियाह ने उसके खिलाफ साजिश करके उसे मार डाला और खुद इसराईल का बादशाह बन गया। यह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में हुआ।

29 तख्त पर बैठते ही बाशा ने यरूबियाम के पूरे खानदान को मरवा दिया। उसने एक को भी जिंदा न छोड़ा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के रहनेवाले अपने खादिम अखियाह की मारिफत फरमाई थी।

30 क्योंकि जो गुनाह यरूबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था उनसे उसने रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया था।

31 बाक्री जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

### इसराईल का बादशाह बाशा

32-33 बाशा बिन अखियाह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 24 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत तिरजा रहा। उसके और यहदाह के बादशाह आसा के दरमियान जिंदगी-भर जंग जारी रही।

34 लेकिन वह भी ऐसा काम करता था जो रब को नापसंद था, क्योंकि उसने यरूबियाम के नमूने पर चलकर वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरूबियाम ने इसराईल को उकसाया था।

## 16

- 1 एक दिन रब ने याहू बिन हनानी को बाशा के पास भेजकर फ़रमाया,  
 2 “पहले तू कुछ नहीं था, लेकिन मैंने तुझे खाक में से उठाकर अपनी क़ौम  
 इसराईल का हुक्मरान बना दिया। तो भी तूने यरूबियाम के नमूने पर चलकर मेरी  
 क़ौम इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया और मुझे तैश दिलाया है।  
 3 इसलिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ करूँगा जो यरूबियाम बिन नबात के  
 घराने के साथ किया था। बाशा की पूरी नसल हलाक हो जाएगी।  
 4 खानदान के जो अफ़राद शहर में मरेगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले  
 मैदान में मरेगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे।”  
 5 बाक़ी जो कुछ बाशा की हुक्मत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और  
 जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में  
 दर्ज हैं।  
 6 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे तिरज़ा में दफ़न किया  
 गया। फिर उसका बेटा ऐला तख़्तनशीन हुआ।  
 7 रब की सज़ा का जो पैग़ाम हनानी के बेटे याहू नबी ने बाशा और उसके  
 खानदान को सुनाया उस की दो वुजूहात थीं। पहले, बाशा ने यरूबियाम के खानदान  
 की तरह वह कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। दूसरे, उसने  
 यरूबियाम के पूरे खानदान को हलाक कर दिया था।

### इसराईल का बादशाह ऐला

- 8 ऐला बिन बाशा यहदाह के बादशाह आसा की हुक्मत के 26वें साल में  
 इसराईल का बादशाह बना। उस की हुक्मत के दो साल के दौरान उसका दास्त-  
 हुक्मत तिरज़ा रहा।  
 9 ऐला का एक अफ़सर बनाम ज़िमरी था। ज़िमरी रथों के आधे हिस्से पर मुक़र्रर  
 था। अब वह बादशाह के खिलाफ़ साज़िशें करने लगा। एक दिन ऐला तिरज़ा में  
 महल के इंचार्ज अरज़ा के घर में बैठा मै पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ  
 10 तो ज़िमरी ने अंदर जाकर उसे मार डाला। फिर वह खुद तख़्त पर बैठ गया।  
 यह यहदाह के बादशाह आसा की हुक्मत के 27वें साल में हुआ।  
 11 तख़्त पर बैठते ही ज़िमरी ने बाशा के पूरे खानदान को हलाक कर दिया।  
 उसने किसी भी मर्द को ज़िंदा न छोड़ा, खाह वह दूर का रिश्तेदार था, खाह दोस्त।  
 12 यों वही कुछ हुआ जो रब ने याहू नबी की मारिफ़त बाशा को फ़रमाया था।

13 क्योंकि बाशा और उसके बेटे ऐला से संगीन गुनाह सरजद हुए थे, और साथ साथ उन्होंने इसराईल को भी यह करने पर उकसाया था। अपने बातिल देवताओं से उन्होंने रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया था।

14 बाकी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

### इसराईल का बादशाह ज़िमरी

15 ज़िमरी यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 27वें साल में इसराईल का बादशाह बना। लेकिन तिरज़ा में उस की हुकूमत सिर्फ सात दिन तक कायम रही। उस वक़्त इसराईली फ़ौज फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही थी।

16 जब फ़ौज में ख़बर फैल गई कि ज़िमरी ने बादशाह के खिलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल किया है तो तमाम इसराईलियों ने लशकरगाह में आकर उसी दिन अपने कमांडर उमरी को बादशाह बना दिया।

17 तब उमरी तमाम फ़ौजियों के साथ जिब्बतून को छोड़कर तिरज़ा का मुहासरा करने लगा।

18 जब ज़िमरी को पता चला कि शहर दूसरों के कब्ज़े में आ गया है तो उसने महल के बुर्ज में जाकर उसे आग लगाई। यों वह जलकर मर गया।

19 इस तरह उसे भी मुनासिब सज़ा मिल गई, क्योंकि उसने भी वह कुछ किया था जो रब को नापसंद था। यरुबियाम के नमूने पर चलकर उसने वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था।

20 जो कुछ ज़िमरी की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साज़िशें उसने की वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज हैं।

### इसराईल का बादशाह उमरी

21 ज़िमरी की मौत के बाद इसराईली दो फिरकों में बंट गए। एक फिरका तिबनी बिन जीनत को बादशाह बनाना चाहता था, दूसरा उमरी को।

22 लेकिन उमरी का फिरका तिबनी के फिरके की निसबत ज्यादा ताक़तवर निकला। चुनाँचे तिबनी मर गया और उमरी पूरी क़ौम पर बादशाह बन गया।

23 उमरी यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 31वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले छः साल दास्ल-हुकूमत तिरज़ा रहा।

24 इसके बाद उसने एक आदमी बनाम समर को चाँदी के 6,000 सिक्के देकर उससे सामरिया पहाड़ी खरीद ली और वहाँ अपना नया दास्त-हुकूमत तामीर किया। पहले मालिक समर की याद में उसने शहर का नाम सामरिया रखा।

25 लेकिन उमरी ने भी वही कुछ किया जो रब को नापसंद था, बल्कि उसने माज़ी के बादशाहों की निसबत ज़्यादा बढ़ी की।

26 उसने यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर चलकर वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराइल को करने पर उकसाया था। नतीजे में इसराइली रब अपने ख़ुदा को अपने बातिल देवताओं से तैश दिलाते रहे।

27 बाक़ी जो कुछ उमरी की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराइल की तारीख़' की किताब में बयान की गई हैं।

28 जब उमरी मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा अख़ियब तख़्तनशीन हुआ।

#### इसराइल का बादशाह अख़ियब

29 अख़ियब बिन उमरी यहदाह के बादशाह आसा के 38वें साल में इसराइल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 22 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत सामरिया रहा।

30 अख़ियब ने भी ऐसे काम किए जो रब को नापसंद थे, बल्कि माज़ी के बादशाहों की निसबत उसके गुनाह ज़्यादा संगीन थे।

31 यरुबियाम के नमूने पर चलना उसके लिए काफ़ी नहीं था बल्कि उसने इससे बढ़कर सैदा के बादशाह इतबाल की बेटी ईज़बिल से शादी भी की। नतीजे में वह उसके देवता बाल के सामने झुककर उस की पूजा करने लगा।

32 सामरिया में उसने बाल का मंदिर तामीर किया और देवता के लिए कुरबानगाह बनाकर उसमें रख दिया।

33 अख़ियब ने यसीरत देवी का बुत भी बनवा दिया। यों उसने अपने धिनौने कामों से माज़ी के तमाम इसराइली बादशाहों की निसबत कहीं ज़्यादा रब इसराइल के ख़ुदा को तैश दिलाया।

34 अख़ियब की हुकूमत के दौरान बैतल के रहनेवाले हियेल ने यरीह शहर को नए सिरे से तामीर किया। जब उस की बुनियाद रखी गई तो उसका सबसे बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और जब उसने शहर के दरवाज़े लगा दिए तो उसके सबसे छोटे

बेटे सजूब को अपनी जान देनी पड़ी। यों रब की वह बात पूरी हुई जो उसने यशुअ बिन नून की मारिफत फ़रमाई थी।

## 17

कौवे इलियास नबी को खाना खिलाते हैं

1 एक दिन इलियास नबी ने जो जिलियाद के शहर तिशबी का था अखियब बादशाह से कहा, “रब इसराईल के खुदा की कसम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, आनेवाले सालों में न ओस, न बारिश पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।”

2 फिर रब ने इलियास से कहा,

3 “यहाँ से चला जा! मशरिक की तरफ़ सफ़र करके वादीए-करीत में छुप जा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में बहती है।

4 पानी तू नदी से पी सकता है, और मैंने कौवों को तुझे वहाँ खाना खिलाने का हुक्म दिया है।”

5 इलियास रब की सुनकर रवाना हुआ और वादीए-करीत में रहने लगा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में बहती है।

6 सुबहो-शाम कौवे उसे रोटी और गोश्त पहुँचाते रहे, और पानी वह नदी से पीता था।

इलियास सारपत की बेवा के पास

7 इस पूरे अरसे में बारिश न हुई, इसलिए नदी आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उसका पानी बिलकुल ख़त्म हो गया

8 तो रब दुबारा इलियास से हमकलाम हुआ,

9 “यहाँ से रवाना होकर सैदा के शहर सारपत में जा बस। मैंने वहाँ की एक बेवा को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।”

10 चुनाँचे इलियास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफ़र करते करते वह शहर के दरवाज़े के पास पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए लकड़ियाँ चुनकर जमा कर रही थी। उसे बुलाकर इलियास ने कहा, “ज़रा किसी बरतन में पानी भरकर मुझे थोड़ा-सा पिलाएँ।”

11 वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इलियास ने उसके पीछे आवाज़ देकर कहा, “मेरे लिए रोटी का टुकड़ा भी लाना!”

12 यह सुनकर बेवा स्क गई और बोली, “रब आपके खुदा की कसम, मेरे पास कुछ नहीं है। बस, एक बरतन में मुट्ठी-भर मैदा और दूसरे में थोड़ा-सा तेल रह गया है। अब मैं जलाने के लिए चंद एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ ताकि अपने और अपने बेटे के लिए आखिरी खाना पकाऊँ। इसके बाद हमारी मौत यक़ीनी है।”

13 इलियास ने उसे तसल्ली दी, “डरें मत! बेशक वह कुछ करें जो आपने कहा है। लेकिन पहले मेरे लिए छोटी-सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आएँ। फिर जो बाक़ी रह गया हो उससे अपने और अपने बेटे के लिए रोटी बनाएँ।

14 क्योंकि रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, “जब तक रब बारिश बरसने न दे तब तक मैदे और तेल के बरतन ख़ाली नहीं होंगे।”

15-16 औरत ने जाकर वैसा ही किया जैसा इलियास ने उसे कहा था। वाक़ई मैदा और तेल कभी ख़त्म न हुआ। रोज़ बरोज़ इलियास, बेवा और उसके बेटे के लिए खाना दस्तयाब रहा। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की मारिफ़त फ़रमाया था।

17 एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस की तबियत बहुत ख़राब हुई, और होते होते उस की जान निकल गई।

18 तब बेवा इलियास से शिकायत करने लगी, “मर्दे-ख़ुदा, मेरा आपके साथ क्या वास्ता? आप तो सिर्फ़ इस मक़सद से यहाँ आए हैं कि रब को मेरे गुनाह की याद दिलाकर मेरे बेटे को मार डालें!”

19 इलियास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को मुझे दे दें।” वह लड़के को औरत की गोद में से उठाकर छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ उसे चारपाई पर रखकर

20 दुआ करने लगा, “ऐ रब मेरे खुदा, तूने इस बेवा को जिसका मेहमान मैं हूँ ऐसी मुसीबत में क्यों डाल दिया है? तूने उसके बेटे को मरने क्यों दिया?”

21 वह तीन बार लाश पर दराज़ हुआ और साथ साथ रब से इलतमास करता रहा, “ऐ रब मेरे खुदा, बराहे-करम बच्चे की जान को उसमें वापस आने दे!”

22 रब ने इलियास की सुनी, और लड़के की जान उसमें वापस आई।

23 इलियास उसे उठाकर नीचे ले आया और उसे उस की माँ को वापस देकर बोला, “देखें, आपका बेटा जिंदा है!”

24 औरत ने जवाब दिया, “अब मैंने जान लिया है कि आप अल्लाह के पैग़ंबर हैं और कि जो कुछ आप रब की तरफ़ से बोलते हैं वह सच है।”

# 18

इलियास इसराईल वापस जाता है

1 बहुत दिन गुज़र गए। फिर काल के तीसरे साल में रब इलियास से हमकलाम हुआ, “अब जाकर अपने आपको अखियब के सामने पेश कर। मैं बारिश का सिलसिला दुबारा शुरू कर दूँगा।”

2 चुनौचे इलियास अखियब से मिलने के लिए इसराईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल की सख़्त गिरिफ़्त में था,

3 इसलिए अखियब ने महल के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया। (अबदियाह रब का ख़ौफ़ मानता था।

4 जब ईज़बिल ने रब के तमाम नबियों को क़त्ल करने की कोशिश की थी तो अबदियाह ने 100 नबियों को दो गारों में छुपा दिया था। हर गार में 50 नबी रहते थे, और अबदियाह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहता था।)

5 अब अखियब ने अबदियाह को हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम चश्मों और वादियों का मुआयना करें। शायद कहीं कुछ घास मिल जाए जो हम अपने घोड़ों और खच्चरों को खिलाकर उन्हें बचा सकें। ऐसा न हो कि हमें खाने की किल्लत के बाइस कुछ जानवरों को ज़बह करना पड़े।”

6 उन्होंने मुक़र्रर किया कि अखियब कहाँ जाएगा और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे से अलग हो गए।

7 चलते चलते अबदियाह को अचानक इलियास उस की तरफ़ आते हुए नज़र आया। जब अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह मुँह के बल झुककर बोला, “मेरे आका इलियास, क्या आप ही हैं?”

8 इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ। जाँ, अपने मालिक को इतला दें कि इलियास आ गया है।”

9 अबदियाह ने एतराज़ किया, “मुझसे क्या ग़लती हुई है कि आप मुझे अखियब से मरवाना चाहते हैं?”

10 रब आपके खुदा की क़सम, बादशाह ने अपने बंदों को हर क़ौम और मुल्क में भेज दिया है ताकि आपको ढूँड निकालें। और जहाँ जवाब मिला कि इलियास यहाँ नहीं है वहाँ लोगों को क़सम खानी पड़ी कि हम इलियास का खोज़ लगाने में नाकाम रहे हैं।

11 और अब आप चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जाकर उसे बताऊँ कि इलियास यहाँ हैं?

12 ऐन मुमकिन है कि जब मैं आपको छोड़कर चला जाऊँ तो रब का रूह आपको उठाकर किसी नामालूम जगह ले जाए। अगर बादशाह मेरी यह इतला सुनकर यहाँ आए और आपको न पाए तो मुझे मार डालेगा। याद रहे कि मैं जवानी से लेकर आज तक रब का खौफ़ मानता आया हूँ।

13 क्या मेरे आका तक यह खबर नहीं पहुँची कि जब ईज़बिल रब के नबियों को क़त्ल कर रही थी तो मैंने क्या किया? मैं दो ग़ारों में पचास पचास नबियों को छुपाकर उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा।

14 और अब आप चाहते हैं कि मैं अखियब के पास जाकर उसे इतला दूँ कि इलियास यहाँ आ गया है? वह मुझे ज़रूर मार डालेगा।”

15 इलियास ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज की हयात की क़सम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, आज मैं अपने आपको ज़रूर बादशाह को पेश करूँगा।”

16 तब अबदियाह चला गया और बादशाह को इलियास की खबर पहुँचाई। यह सुनकर अखियब इलियास से मिलने के लिए आया।

क्या बाल हकीक़ी माबूद है या रब?

17 इलियास को देखते ही अखियब बोला, “ऐ इसराईल को मुसीबत में डालनेवाले, क्या आप वापस आ गए हैं?”

18 इलियास ने एतराज़ किया, “मैं तो इसराईल के लिए मुसीबत का बाइस नहीं बना बल्कि आप और आपके बाप का घराना। आप रब के अहक़ाम छोड़कर बाल के बुतों के पीछे लग गए हैं।

19 अब मैं आपको चैलेंज देता हूँ, तमाम इसराईल को बुलाकर करमिल पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ बाल देवता के 450 नबियों को और ईज़बिल की मेज़ पर शरीक होनेवाले यसीरत देवी के 400 नबियों को भी बुलाएँ।”

20 अखियब मान गया। उसने तमाम इसराईलियों और नबियों को बुलाया। जब वह करमिल पहाड़ पर जमा हो गए

21 तो इलियास उनके सामने जा खड़ा हुआ और कहा, “आप कब तक कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ लँगड़ाते रहेंगे? \* अगर रब खुदा है तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करें, लेकिन अगर बाल वाहिद खुदा है तो उसी के पीछे लग जाएँ।”

\* 18:21 देखिए आयत 26।

लोग खामोश रहे।

22 इलियास ने बात जारी रखी, “रब के नबियों में से सिर्फ मैं ही बाकी रह गया हूँ। दूसरी तरफ बाल देवता के यह 450 नबी खड़े हैं।

23 अब दो बैल ले आँ। बाल के नबी एक को पसंद करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके अपनी कुरबानगाह की लकड़ियों पर रख दें। लेकिन वह लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं दूसरे बैल को तैयार करके अपनी कुरबानगाह की लकड़ियों पर रख दूँगा। लेकिन मैं भी उन्हें आग नहीं लगाऊँगा।

24 फिर आप अपने देवता का नाम पुकारें जबकि मैं रब का नाम पुकारूँगा। जो माबूद कुरबानी को जलाकर जवाब देगा वही खुदा है।” तमाम लोग बोले, “आप ठीक कहते हैं।”

25 फिर इलियास ने बाल के नबियों से कहा, “शुरू करें, क्योंकि आप बहुत हैं। एक बैल को चुनकर उसे तैयार करें। लेकिन उसे आग मत लगाना बल्कि अपने देवता का नाम पुकारें ताकि वह आग भेज दे।”

26 उन्होंने बैलों में से एक को चुनकर उसे तैयार किया, फिर बाल का नाम पुकारने लगे। सुबह से लेकर दोपहर तक वह मुसलसल चीखते-चिल्लाते रहे, “ऐ बाल, हमारी सुन!” साथ साथ वह उस कुरबानगाह के इर्दगिर्द नाचते रहे † जो उन्होंने बनाई थी। लेकिन न कोई आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।

27 दोपहर के वक़्त इलियास उनका मज़ाक उड़ाने लगा, “ज्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें! शायद वह सोचों में गरक हो या अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए एक तरफ़ गया हो। यह भी हो सकता है कि वह कहीं सफ़र कर रहा हो। या शायद वह गहरी नींद सो गया हो और उसे जगाने की ज़रूरत है।”

28 तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीखने-चिल्लाने लगे। मामूल के मुताबिक़ वह छुरियों और नेज़ों से अपने आपको ज़ख़मी करने लगे, यहाँ तक कि खून बहने लगा।

29 दोपहर गुज़र गई, और वह शाम के उस वक़्त तक वज्द में रहे जब ग़ल्ला की नज़र पेश की जाती है। लेकिन कोई आवाज़ न सुनाई दी। न किसी ने जवाब दिया, न उनके तमाशे पर तवज्जुह दी।

† 18:26 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : लँगड़ाते हुए नाचते रहे। ग़ालिबन बाल की ताज़ीम में एक ख़ास किस्म का रक्स। लिहाज़ा आयत 21 में इलियास का सवाल, “आप कब तक . . . लँगड़ाते रहेंगे?”

30 फिर इलियास इसराईलियों से मुखातिब हुआ, “आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब करीब आए। वहाँ रब की एक कुरबानगाह थी जो गिराई गई थी। अब इलियास ने वह दुबारा खड़ी की।

31 उसने याकूब से निकले हर कबीले के लिए एक एक पत्थर चुन लिया। (बाद में रब ने याकूब का नाम इसराईल रखा था)।

32 इन बारह पत्थरों को लेकर इलियास ने रब के नाम की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई। इसके इर्दगिर्द उसने इतना चौड़ा गढ़ा खोदा कि उसमें तकरीबन 15 लिटर पानी समा सकता था।

33 फिर उसने कुरबानगाह पर लकड़ियों का ढेर लगाया और बैल को टुकड़े टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया, “चार घड़े पानी से भरकर कुरबानी और लकड़ियों पर उंडेल दें!”

34 जब उन्होंने ऐसा किया तो उसने दुबारा ऐसा करने का हुक्म दिया, फिर तीसरी बार।

35 आखिरकार इतना पानी था कि उसने चारों तरफ कुरबानगाह से टपककर गढ़े को भर दिया।

36 शाम के वक़्त जब गल्ला की नज़र पेश की जाती है इलियास ने कुरबानगाह के पास जाकर बुलंद आवाज़ से दुआ की, “ऐ रब, ऐ इब्राहीम, इसहाक और इसराईल के ख़ुदा, आज लोगों पर ज़ाहिर कर कि इसराईल में तू ही ख़ुदा है और कि मैं तेरा खादिम हूँ। साबित कर कि मैंने यह सब कुछ तेरे हुक्म के मुताबिक़ किया है।

37 ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मेरी सुन ताकि यह लोग जान लें कि तू, ऐ रब, ख़ुदा है और कि तू ही उनके दिलों को दुबारा अपनी तरफ़ मायल कर रहा है।”

38 अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल हुई। आग ने न सिर्फ़ कुरबानी और लकड़ी को भस्म कर दिया बल्कि कुरबानगाह के पत्थरों और उसके नीचे की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी एकदम सूख गया।

39 यह देखकर इसराईली औधे मुँह गिरकर पुकारने लगे, “रब ही ख़ुदा है! रब ही ख़ुदा है!”

40 फिर इलियास ने उन्हें हुक्म दिया, “बाल के नबियों को पकड़ लें। एक भी बचने न पाए!” लोगों ने उन्हें पकड़ लिया तो इलियास उन्हें नीचे वादीए-कैसोन में ले गया और वहाँ सबको मौत के घाट उतार दिया।

बारिश होती है

41 फिर इलियास ने अखियब से कहा, “अब जाकर कुछ खाएँ और पिँ, क्योंकि मूसलाधार बारिश का शोर सुनाई दे रहा है।”

42 चुनौचे अखियब खाने-पीने के लिए चला गया जबकि इलियास करमिल पहाड की चोटी पर चढ गया। वहाँ उसने झुककर अपने सर को दोनों घुटनों के बीच में छुपा लिया।

43 अपने नौकर को उसने हुक्म दिया, “जाओ, समुंदर की तरफ देखो।”

नौकर गया और समुंदर की तरफ देखा, फिर वापस आकर इलियास को इतला दी, “कुछ भी नज़र नहीं आता।” लेकिन इलियास ने उसे दुबारा देखने के लिए भेज दिया। इस दफा भी कुछ मालूम न हो सका। सात बार इलियास ने नौकर को देखने के लिए भेजा।

44 आखिरकार जब नौकर सातवीं दफा गया तो उसने वापस आकर इतला दी, “एक छोटा-सा बादल समुंदर में से निकलकर ऊपर चढ रहा है। वह आदमी के हाथ के बराबर है।”

तब इलियास ने हुक्म दिया, “जाओ, अखियब को इतला दो, ‘घोड़ों को फौरन रथ में जोतकर घर चले जाएँ, वरना बारिश आपको रोक लेगी।’”

45 नौकर इतला देने चला गया तो जल्द ही आँधी आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अखियब जल्दी से रथ पर सवार होकर यज़्ज़एल के लिए रवाना हो गया।

46 उस वक्त रब ने इलियास को खास ताक़त दी। सफर के लिए कमरबस्ता होकर वह अखियब के रथ के आगे आगे दौड़कर उससे पहले यज़्ज़एल पहुँच गया।

## 19

इलियास भाग जाता है

1 अखियब ने ईज़बिल को सब कुछ सुनाया जो इलियास ने कहा था, यह भी कि उसने बाल के नबियों को किस तरह तलवार से मार दिया था।

2 तब ईज़बिल ने कासिद को इलियास के पास भेजकर उसे इतला दी, “देवता मुझे सख्त सज़ा दें अगर मैं कल इस वक्त तक आपको उन नबियों की-सी सज़ा न दूँ।”

3 इलियास सरख्ट डर गया और अपनी जान बचाने के लिए भाग गया। चलते चलते वह यहदाह के शहर बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ वह अपने नौकर को छोड़कर

4 आगे रेगिस्तान में जा निकला। एक दिन के सफ़र के बाद वह सीक की झाड़ी के पास पहुँच गया और उसके साये में बैठकर दुआ करने लगा, “ऐ रब, मुझे मरने दे। बस अब काफ़ी है। मेरी जान ले ले, क्योंकि मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।”

5 फिर वह झाड़ी के साये में लेटकर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छूकर कहा, “उठ, खाना खा ले!”

6 जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि सिरहाने के करीब कोयलों पर बनाई गई रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उसने रोटी खाई, पानी पिया और दुबारा सो गया।

7 लेकिन रब का फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ लगाकर कहा, “उठ, खाना खा ले, वरना आगे का लंबा सफ़र तेरे बस की बात नहीं होगी।”

8 तब इलियास ने उठकर दुबारा खाना खाया और पानी पिया। इस खुराक ने उसे इतनी तकवियत दी कि वह चालीस दिन और चालीस रात सफ़र करते करते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया।

9 वहाँ वह रात गुज़ारने के लिए एक गार में चला गया।

**रब इलियास की हौसलाअफ़ज़ाई करता है**

गार में रब उससे हमकलाम हुआ। उसने पूछा, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?”

10 इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी लशकरों के खुदा की ख़िदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है, क्योंकि इसराइलियों ने तेरे अहद को तर्क कर दिया है। उन्होंने तेरी कुरबानगाहों को गिराकर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।”

11 जवाब में रब ने फ़रमाया, “गार से निकलकर पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!” फिर रब वहाँ से गुज़रा। उसके आगे आगे बड़ी और ज़बरदस्त आँधी आई जिसने पहाड़ों को चीरकर चट्टानों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब आँधी में नहीं था।

12 इसके बाद ज़लज़ला आया, लेकिन रब ज़लज़ले में नहीं था।

13 जलजले के बाद भडकती हुई आग वहाँ से गुजरी, लेकिन रब आग में भी नहीं था। फिर नरम हवा की धीमी धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ सुनकर इलियास ने अपने चेहरे को चादर से ढाँप लिया और निकलकर गार के मुँह पर खड़ा हो गया। एक आवाज़ उससे मुखातिब हुई, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?”

14 इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी लश्करोँ के खुदा की खिदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है, क्योंकि इसराईलियों ने तेरे अहद को तर्क कर दिया है। उन्होंने तेरी कुरबानगाहों को गिराकर तेरे नबियों को तलवार से कत्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।”

15 रब ने जवाब में कहा, “रेगिस्तान में उस रास्ते से होकर वापस जा जिसने तुझे यहाँ पहुँचाया है। फिर दमिशक चला जा। वहाँ हज़ाएल को तेल से मसह करके शाम का बादशाह करार दे।

16 इसी तरह याह बिन निमसी को मसह करके इसराईल का बादशाह करार दे और अबील-मह्ला के रहनेवाले इलीशा बिन साफ़त को मसह करके अपना जा-नशीन मुकर्रर कर।

17 जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे याह मार देगा, और जो याह की तलवार से बच जाएगा उसे इलीशा मार देगा।

18 लेकिन मैंने अपने लिए इसराईल में 7,000 अफ़राद को बचा लिया है, उन तमाम लोगों को जो अब तक न बाल देवता के सामने झुके, न उसके बुत को बोसा दिया है।”

### इलियास इलीशा को अपना जा-नशीन मुकर्रर करता है

19 इलियास वहाँ से चला गया। इसराईल में वापस आकर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो बैलों की बारह जोड़ियों की मदद से हल चला रहा था। खुद वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल रहा था। इलियास ने उसके पास आकर अपनी चादर उसके कंधों पर डाल दी और स्के बगैर आगे निकल गया।

20 इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़कर इलियास के पीछे भागा। उसने कहा, “पहले मुझे अपने माँ-बाप को बोसा देकर खैरबाद कहने दीजिए। फिर मैं आपके पीछे हो लूँगा।” इलियास ने जवाब दिया, “चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह कुछ याद रहे जो मैंने आपके साथ किया है।”

21 तब इलीशा वापस चला गया। बैलों की एक जोड़ी को लेकर उसने दोनों को ज़बह किया। हल चलाने का सामान उसने गोश्त पकाने के लिए जला दिया। जब गोश्त तैयार था तो उसने उसे लोगों में तक़सीम करके उन्हें खिला दिया। इसके बाद इलीशा इलियास के पीछे होकर उस की खिदमत करने लगा।

## 20

शाम की फ़ौज सामरिया का मुहासरा करती है

1 एक दिन शाम के बादशाह बिन-हदद ने अपनी पूरी फ़ौज को जमा किया। 32 इतहादी बादशाह भी अपने रथों और घोड़ों को लेकर आए। इस बड़ी फ़ौज के साथ बिन-हदद ने सामरिया का मुहासरा करके इसराईल से जंग का एलान किया।

2 उसने अपने कासिदों को शहर में भेजकर इसराईल के बादशाह अखियब को इत्तला दी,

3 “अब से आपका सोना, चाँदी, ख़वातीन और बेटे मेरे ही हैं।”

4 इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, “मेरे आक्रा और बादशाह, आपकी मरज़ी। मैं और जो कुछ मेरा है आपकी मिलकियत है।”

5 थोड़ी देर के बाद कासिद बिन-हदद की नई ख़बर लेकर आए, “मैंने आपसे सोने, चाँदी, ख़वातीन और बेटों का तक्राज़ा किया है।

6 अब ग़ौर करें! कल इस वक़्त मैं अपने मुलाज़िमों को आपके पास भेज दूँगा, और वह आपके महल और आपके अफ़सरों के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ भी आपको प्यारा है उसे वह ले जाएंगे।”

7 तब अखियब बादशाह ने मुल्क के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे बात की, “देखें यह आदमी कितना बुरा इरादा रखता है। जब उसने मेरी ख़वातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तक्राज़ा किया तो मैंने इनकार न किया।”

8 बुज़ुर्गों और बाक़ी लोगों ने मिलकर मशवरा दिया, “उस की न सुनें, और जो कुछ वह माँगता है उस पर राज़ी न हो जाएँ।”

9 चुनौचे बादशाह ने कासिदों से कहा, “मेरे आक्रा बादशाह को जवाब देना, जो कुछ आपने पहली मरतबा माँग लिया वह मैं आपको देने के लिए तैयार हूँ, लेकिन यह आखिरी तक्राज़ा मैं पूरा नहीं कर सकता।”

जब कासिदों ने बिन-हदद को यह ख़बर पहुँचाई

10 तो उसने अखियब को फ़ौरन खबर भेज दी, “देवता मुझे सख्त सज़ा दें अगर मैं सामरिया को नेस्तो-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा कि मेरा हर फ़ौजी मुट्ठी-भर खाक अपने साथ वापस ले जा सके!”

11 इसराईल के बादशाह ने कासिदों को जवाब दिया, “उसे बता देना कि जो अभी जंग की तैयारियाँ कर रहा है वह फ़तह के नारे न लगाए।”

12 जब बिन-हदद को यह इतला मिली तो वह लशकरगाह में अपने इतहादी बादशाहों के साथ मै पी रहा था। उसने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया, “हमला करने के लिए तैयारियाँ करो!” चुनौचे वह शहर पर हमला करने की तैयारियाँ करने लगे।

### शाम की फ़ौज से पहली जंग

13 इस दौरान एक नबी अखियब बादशाह के पास आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या तुझे दुश्मन की यह बड़ी फ़ौज नज़र आ रही है? तो भी मैं इसे आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।’”

14 अखियब ने सवाल किया, “रब यह किसके वसीले से करेगा?” नबी ने जवाब दिया, “रब फ़रमाता है कि ज़िलों पर मुकर्रर अफ़सरों के जवान यह फ़तह पाएँगे।” बादशाह ने मज़ीद पूछा, “लड़ाई में कौन पहला कदम उठाए?” नबी ने कहा, “तू ही।”

15 चुनौचे अखियब ने ज़िलों पर मुकर्रर अफ़सरों के जवानों को बुलाया। 232 अफ़राद थे। फिर उसने बाकी इसराईलियों को जमा किया। 7,000 अफ़राद थे।

16-17 दोपहर को वह लड़ने के लिए निकले। ज़िलों पर मुकर्रर अफ़सरों के जवान सबसे आगे थे। बिन-हदद और 32 इतहादी बादशाह लशकरगाह में बैठे नशे में धुत मै पी रहे थे कि अचानक शहर का जायज़ा लेने के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही अंदर आए और कहने लगे, “सामरिया से आदमी निकल रहे हैं।”

18 बिन-हदद ने हुक्म दिया, “हर सूरत में उन्हें जिंदा पकड़ें, खाह वह अमनपसंद इरादा रखते हों या ना।”

19 लेकिन उन्हें यह करने का मौक़ा न मिला, क्योंकि इसराईल के ज़िलों पर मुकर्रर अफ़सरों और बाकी फ़ौजियों ने शहर से निकल कर

20 फ़ौरन उन पर हमला कर दिया। और जिस भी दुश्मन का मुकाबला हुआ उसे मारा गया। तब शाम की पूरी फ़ौज भाग गई। इसराईलियों ने उनका ताक्क़ुब किया,

लेकिन शाम का बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार होकर चंद्र एक घुड़सवारों के साथ बच निकला।

21 उस वक्रत इसराईल का बादशाह जंग के लिए निकला और घोड़ों और रथों को तबाह करके अरामियों को जबरदस्त शिकस्त दी।

### शाम की फ़ौज से दूसरी जंग

22 बाद में मज़कूरा नबी द्वारा इसराईल के बादशाह के पास आया। वह बोला, “अब मज़बूत होकर बड़े ध्यान से सोचें कि आनेवाले दिनों में क्या क्या तैयारियाँ करनी चाहिएँ, क्योंकि अगले बहार के मौसम में शाम का बादशाह द्वारा आप पर हमला करेगा।”

23 शाम के बादशाह को भी मशवरा दिया गया। उसके बड़े अफ़सरों ने ख़याल पेश किया, “इसराईलियों के देवता पहाड़ी देवता हैं, इसलिए वह हम पर ग़ालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम मैदानी इलाक़े में उनसे लड़ें तो हर सूरत में जीतेंगे।

24 लेकिन हमारा एक और मशवरा भी है। 32 बादशाहों को हटाकर उनकी जगह अपने अफ़सरों को मुक़र्रर करें।

25 फिर एक नई फ़ौज तैयार करें जो तबाहशुदा पुरानी फ़ौज जैसी ताक़तवर हो। उसके उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे। फिर जब हम मैदानी इलाक़े में उनसे लड़ेंगे तो उन पर ज़रूर ग़ालिब आएँगे।”

बादशाह उनकी बात मानकर तैयारियाँ करने लगा।

26 जब बहार का मौसम आया तो वह शाम के फ़ौजियों को जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए अफ़क़ शहर गया।

27 इसराईली फ़ौज भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अशया का बंदोबस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने खैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम की वसी फ़ौज के मुक़ाबले में बकरियों के दो छोटे रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्योंकि पूरा मैदान शाम के फ़ौजियों से भरा था।

28 फिर मर्दे-ख़ुदा ने अखियब के पास आकर कहा, “रब फ़रमाता है, ‘शाम के लोग ख़याल करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इसलिए मैदानी इलाक़े में नाकाम रहेगा। चुनौचे मैं उनकी ज़बरदस्त फ़ौज को तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।”

29 सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुकाबिल सफ़आरा रही। सातवें दिन लड़ाई का आगाज़ हुआ। इसराईली इस मरतबा भी शाम की फ़ौज पर ग़ालिब आए। उस दिन उन्होंने उनके एक लाख प्यादा फ़ौजियों को मार दिया।

30 बाक़ी फ़रार होकर अफ़्रीक़ शहर में घुस गए। तकररीबन 27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो गए।

अख़ियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ़्रीक़ में फ़रार हुआ था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश कर रहा था।

31 फिर उसके अफ़सरों ने उसे मशवरा दिया, “सुना है कि इसराईल के बादशाह नरमदिल होते हैं। क्यों न हम टाट ओढकर और अपनी गरदनो में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास जाएँ? शायद वह आपको ज़िंदा छोड़ दे।”

32 चुनौचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढकर और अपनी गरदनो में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास आए। उन्होंने कहा, “आपका खादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे ज़िंदा छोड़ दें।” अख़ियब ने सवाल किया, “क्या वह अब तक ज़िंदा है? वह तो मेरा भाई है!”

33 जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि अख़ियब का रुज़ान किस तरफ़ है तो उन्होंने जल्दी से इसकी तसदीक़ की, “जी, बिन-हदद आपका भाई है!” अख़ियब ने हुक्म दिया, “जाकर उसे बुला लाएँ।”

तब बिन-हदद निकल आया, और अख़ियब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी।

34 बिन-हदद ने अख़ियब से कहा, “मैं आपको वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप ने आपके बाप से छीन लिए थे। आप हमारे दास्ल-हुकूमत दमिशक़ में तिजारती मराकिज़ भी कायम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले सामरिया में किया था।” अख़ियब बोला, “ठीक है। इसके बदले में मैं आपको रिहा कर दूँगा।” उन्होंने मुआहदा किया, फिर अख़ियब ने शाम के बादशाह को रिहा कर दिया।

नबी अख़ियब को मलामत करता है

35 उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को हिदायत की, “जाकर अपने साथी को कह दे कि वह तुझे मारे।” नबी ने ऐसा किया, लेकिन साथी ने इनकार किया।

36 फिर नबी बोला, “चूँकि आपने रब की नहीं सुनी, इसलिए ज्योंही आप मुझसे चले जाएंगे शेरबबर आपको फाड़ डालेगा।” और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से निकला तो शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे फाड़ डाला।

37 नबी की मुलाकात किसी और से हुई तो उसने उससे भी कहा, “मेहरबानी करके मुझे मारें!” उस आदमी ने नबी को मार मारकर ज़खमी कर दिया।

38 तब नबी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी ताकि उसे पहचाना न जाए, फिर रास्ते के किनारे पर अखियब बादशाह के इंतज़ार में खड़ा हो गया।

39 जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी चिल्लाकर उससे मुखातिब हुआ, “जनाब, मैं मैदाने-जंग में लड़ रहा था कि अचानक किसी आदमी ने मेरे पास आकर अपने कैदी को मेरे हवाले कर दिया। उसने कहा, ‘इसकी निगरानी करना। अगर यह किसी भी वजह से भाग जाए तो आपको उस की जान के एवज़ अपनी जान देनी पड़ेगी या आपको एक मन चॉदी अदा करनी पड़ेगी।’

40 लेकिन मैं इधर-उधर मसरूफ़ रहा, और इतने में कैदी गायब हो गया।” अखियब बादशाह ने जवाब दिया, “आपने ख़ुद अपने बारे में फ़ैसला दिया है। अब आपको इसका नतीजा भुगतना पड़ेगा।”

41 फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों पर से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया कि यह नबियों में से एक है।

42 नबी ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘मैंने मुक़रर किया था कि बिन-हदद को मेरे लिए मख़सूस करके हलाक करना है, लेकिन तूने उसे रिहा कर दिया है। अब उस की जगह तू ही मरेगा, और उस की क़ौम की जगह तेरी क़ौम को नुक़सान पहुँचेगा।’”

43 इसराईल का बादशाह बड़े गुस्से और बदमिज़ाजी के आलम में सामरिया में अपने महल में चला गया।

## 21

ईज़बिल के हाथों नबोत का क़त्ल

1 इसके बाद एक और काबिले-ज़िक्र बात हुई। यज़्बल में सामरिया के बादशाह अखियब का एक महल था। महल की ज़मीन के साथ साथ अंगूर का बाग़ था। मालिक का नाम नबोत था।

2 एक दिन अखियब ने नबोत से बात की, “अंगूर का आपका बाग़ मेरे महल के करीब ही है। उसे मुझे दे दें, क्योंकि मैं उसमें सब्ज़ियाँ लगाना चाहता हूँ। मुआवज़े

में मैं आपको उससे अच्छा अंगूर का बाग दे दूँगा। लेकिन अगर आप पैसे को तरजीह दें तो आपको उस की पूरी रकम अदा कर दूँगा।”

3 लेकिन नबोत ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि मैं आपको वह मौरूसी ज़मीन दूँ जो मेरे बापदादा ने मेरे सुपुर्द की है!”

4 अखियब बड़े गुस्से में अपने घर वापस चला गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की मौरूसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर लेट गया और अपना मुँह दीवार की तरफ़ करके खाना खाने से इनकार किया।

5 उस की बीवी ईज़बिल उसके पास आई और पूछने लगी, “क्या बात है? आप क्यों इतने बेज़ार हैं कि खाना भी नहीं खाना चाहते?”

6 अखियब ने जवाब दिया, “यज़्ज़एल का रहनेवाला नबोत मुझे अंगूर का बाग नहीं देना चाहता। गो मैं उसे पैसे देना चाहता था बल्कि उसे इसकी जगह कोई और बाग देने के लिए तैयार था तो भी वह बज़िद रहा।”

7 ईज़बिल बोली, “क्या आप इसराईल के बादशाह हैं कि नहीं? अब उठें! खाँ, पिँ और अपना दिल बहलाँ। मैं ही आपको नबोत यज़्ज़एली का अंगूर का बाग दिला दूँगी।”

8 उसने अखियब के नाम से खुतूत लिखकर उन पर बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें नबोत के शहर के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा को भेज दिया।

9 खतों में ज़ैल की खबर लिखी थी,

“शहर में एलान करें कि एक दिन का रोज़ा रखा जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा दें।

10 लेकिन उसके मुक़ाबिल दो बदमाशों को बिठा देना। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाएँ, ‘इस शरख़ ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।’ फिर उसे शहर से बाहर ले जाकर संगसार करें।”

11 यज़्ज़एल के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा ने ऐसा ही किया।

12 उन्होंने रोज़े के दिन का एलान किया। जब लोग मुकर्ररा दिन जमा हुए तो नबोत को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा दिया गया।

13 फिर दो बदमाश आए और उसके मुक़ाबिल बैठ गए। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाने लगे, “इस शरख़ ने अल्लाह और

बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।” तब नबोत को शहर से बाहर ले जाकर संगसार कर दिया गया।

14 फिर शहर के बुजुर्गों ने ईज़बिल को इतला दी, “नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।”

15 यह खबर मिलते ही ईज़बिल ने अखियब से बात की, “जाएँ, नबोत यज़्ज़एली के उस बाग पर कब्ज़ा करें जो वह आपको बेचने से इनकार कर रहा था। अब वह आदमी जिंदा नहीं रहा बल्कि मर गया है।”

16 यह सुनकर अखियब फौरन नबोत के अंगूर के बाग पर कब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

### इलियास अखियब को सज़ा सुनाता है

17 तब रब इलियास तिशबी से हमकलाम हुआ,

18 “इसराईल के बादशाह अखियब से जो सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक़्त वह नबोत के अंगूर के बाग में है, क्योंकि वह उस पर कब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है।

19 उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि तूने एक आदमी को बिलावजह क़त्ल करके उस की मिलकियत पर कब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ कुत्तों ने नबोत का खून चाटा है वहाँ वह तेरा खून भी चाटेंगे।’”

20 जब इलियास अखियब के पास पहुँचा तो बादशाह बोला, “मेरे दुश्मन, क्या आपने मुझे ढूँड निकाला है?” इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैंने आपको ढूँड निकाला है, क्योंकि आपने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया है जो रब को नापसंद है।

21 अब सुनें रब का फ़रमान, ‘मैं तुझे यों मुसीबत में डाल दूँगा कि तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इसराईल में से तेरे खानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, खाह वह बालिग हो या बच्चा।

22 तूने मुझे बड़ा तैश दिलाया और इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया है। इसलिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सुलूक होगा जो मैंने यरुबियाम बिन नबात और बाशा बिन अखियाह के साथ किया है।’

23 ईज़बिल पर भी रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, ‘कुत्ते यज़्ज़एल की फ़सील के पास ईज़बिल को खा जाएंगे।

24 अखियब के खानदान में से जो शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे।”

25 और यह हकीकत है कि अखियब जैसा खराब शख्स कोई नहीं था। क्योंकि ईज़बिल के उकसाने पर उसने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था।

26 सबसे धिनौनी बात यह थी कि वह बुतों के पीछे लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें रब ने इसराईल से निकाल दिया था।

27 जब अखियब ने इलियास की यह बातें सुनीं तो उसने अपने कपड़े फाड़कर टाट ओढ़ लिया। रोज़ा रखकर वह गमगीन हालत में फिरता रहा। टाट उसने सोते वक्त भी न उतारा।

28 तब रब दुबारा इलियास तिशबी से हमकलाम हुआ,

29 “क्या तूने गौर किया है कि अखियब ने अपने आपको मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है? चूँकि उसने अपनी आजिज़ी का इज़हार किया है इसलिए मैं उसके जीते-जी उसके खानदान को मज़कूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक्त जब उसका बेटा तख़्त पर बैठेगा।”

## 22

### झूटे नबियों और मीकायाह का मुकाबला

1 तीन साल तक शाम और इसराईल के दरमियान सुलह रही।

2 तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त इसराईल के बादशाह अखियब से मिलने गया।

3 उस वक्त इसराईल के बादशाह ने अपने अफ़सरों से बात की, “देखें, रामात-जिलियाद हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यों कुछ नहीं कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के क़ब्ज़े से छुड़वाना चाहिए।”

4 उसने यहूसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?” यहूसफ़त ने जवाब दिया, “जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें!”

5 लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की मरज़ी मालूम कर लें।”

6 इसराईल के बादशाह ने तक्ररीबन 400 नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या मैं रामात-जिलियाद पर हमला करूँ या इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया, “जी करें, क्योंकि रब उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

7 लेकिन यह्सफ़त मुतमइन न हुआ। उसने पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे हम दरियाफ़त कर सकें?”

8 इसराईल का बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह बिन इमला है।” यह्सफ़त ने एतराज़ किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!”

9 तब इसराईल के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे पास पहुँचा देना!”

10 अख़ियब और यह्सफ़त अपने शाही लिबास पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के करीब अपने अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे।

11 एक नबी बनाम सिदकियाह बिन कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”

12 दूसरे नबी भी इस किस्म की पेशगोइयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आपके हवाले कर देगा।”

13 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया, “देखें, बाकी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई करें!”

14 लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया, “रब की हयात की कसम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो रब मुझे फ़रमाएगा।”

15 जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला करें, क्योंकि रब शहर को आपके हवाले करके आपको कामयाबी बख़्शेगा।”

16 बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आपको समझाना पड़ेगा कि आप कसम खाकर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हकीकत है।”

17 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम इसराईल गल्लाबान से महरूम भेड़-बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए।’”

18 इसराईल के बादशाह ने यहसफ़त से कहा, “लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह शरूख हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयों करता है?”

19 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी।

20 रब ने पूछा, ‘कौन अख़ियब को रामात-जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह।

21 आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी।’

22 रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’ रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों काबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’

23 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फैसला कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

24 तब सिदक्रियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि तुझसे बात करे?”

25 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आपको पता चलेगा।”

26 तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, “मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो!

27 उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया करें।’”

28 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुखातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अखियब रामात के करीब मर जाता है

29 इसके बाद इसराईल का बादशाह अखियब और यहदाह का बादशाह यहसफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने के लिए रवाना हुए।

30 जंग से पहले अखियब ने यहसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनौचे इसराईल का बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में आया।

31 शाम के बादशाह ने रथों पर मुकर्रर अपने 32 अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत लड़ना, खाह वह छोटा हो या बड़ा।”

32 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर यहसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यक्रीनन यही इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यहसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा

33 तो दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अखियब बादशाह नहीं है, और वह उसका ताक्कुब करने से बाज़ आए।

34 लेकिन किसी ने खास निशाना बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह अखियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-बकतर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथबान को हुक्म दिया, “रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।”

35 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद किस्म की लड़ाई जारी रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। खून ज़ख़म से रथ के फ़र्श पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अखियब मर गया।

36 जब सूरज ग़रूब होने लगा तो इसराईली फ़ौज में बुलंद आवाज़ से एलान किया गया, “हर एक अपने शहर और अपने इलाक़े में वापस चला जाए!”

37 बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को सामरिया लाकर दफ़नाया गया।

38 शाही रथ को सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ कसबियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया गया। कुत्ते भी आकर खून को चाटने लगे। यों रब का फ़रमान पूरा हुआ।

39 बाक़ी जो कुछ अखियब की हुक्मत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज़ है। उसमें बादशाह का तामीरकरदा हाथीदाँत का महल और वह शहर बयान किए गए हैं जिनकी क़िलाबंदी उसने की।

40 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा अखज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

41 आसा का बेटा यहूसफ़त इसराईल के बादशाह अख़ियब की हुकूमत के चौथे साल में यहूदाह का बादशाह बना।

42 उस वक़्त उस की उम्र 35 साल थी। उसका दासूल-हुकूमत यरूशलम रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया 25 साल था। माँ का नाम अज़ूबा बिन सिलही था।

43 वह हर काम में अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों पर जानवरों को क़ुरबान करने और बख़ूर जलाने का इंतज़ाम जारी रहा।

44 यहूसफ़त और इसराईल के बादशाह के दरमियान सुलह कायम रही।

45 बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें सब उसमें बयान की गई हैं।

46 जो जिस्मफ़रोश मर्द और औरतें आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें यहूसफ़त ने मुल्क में से मिटा दिया।

47 उस वक़्त मुल्के-अदोम का बादशाह न था बल्कि यहूदाह का एक अफ़सर उस पर हुक्मरानी करता था।

48 यहूसफ़त ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया ताकि वह तिजारात करके ओफ़ीर से सोना लाएँ। लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही बंदरगाह अस्यून-जाबर में तबाह हो गए।

49 तबाह होने से पहले इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह बिन अख़ियब ने यहूसफ़त से दरखास्त की थी कि इसराईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें। लेकिन यहूसफ़त ने इनकार किया था।

50 जब यहूसफ़त मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अख़ज़ियाह

51 अखियब का बेटा अखज़ियाह यहूदाह के बादशाह यहूसफत की हुकूमत के 17वें साल में इसराईल का बादशाह बना। वह दो साल तक इसराईल पर हुक्मरान रहा। सामरिया उसका दासूल-हुकूमत था।

52 जो कुछ उसने किया वह रब को नापसंद था, क्योंकि वह अपने माँ-बाप और यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर चलता रहा, उसी यरुबियाम के नमूने पर जिसने इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था।

53 अपने बाप की तरह बाल देवता की खिदमत और पूजा करने से उसने रब, इसराईल के खुदा को तैश दिलाया।

किताबे-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo  
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299